संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 87
पृष्ठ 8
रविवार
14 दिसम्बर 2025
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- यूरिक एसिड और जोड़ों के दर्द....

विचार- हमारे हितों की अनदेखी कर हमसे ...

खेल- बड़े लक्ष्य का दबाव? उथप्पा ने...

सीजेआई सूर्यकांत के फैसले ने कैसे बदल दी सदियों पुरानी परंपरा

पिता नहीं, मां की जाति पर प्रमाणपत्र

नई दिल्ली, एजेंसी। एससी एसटी का रिजर्वेशन हिंदुस्तान की राजनीति और समाज में बहुत ही संवेदनशील मुद्दा रहा है। अक्सर ये सुना है कि जाति पिता से मिलती है और सदियों से यह नियम और परंपरा रही है। लेकिन क्या हो अगर देश की सर्वोच्च न्यायालय सबसे बड़ी अदालत यह निर्णय दे और साथ ही साथ सदियों पुरानी इस दीवार को एक निर्णय से ढहा दे। क्या मां की जाति के आधार पर बच्चे को अनुसूचित जाति का सर्टिफिकेट दिया जा सकता है? भले ही उसके पिता नॉन एससी हो। इसे सुप्रीम कोर्ट के केवल निर्णय भर से नहीं देख सकते। यह आरक्षण के पूरे फलसफे को साथ ही साथ संविधान की रूह को और आपकी पहचान के नियम को हमेशा के लिए बदलने का माद्दा रखती है। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत की बेंच ने जो निर्णय दिया है उसमें उन्होंने एक बेटी को उसकी मां की अनुसूचित जाति की पहचान के आधार पर अनुसूचित जाति का एससी का सर्टिफिकेट देने का निर्णय दिया है। यह एक रेयर निर्णय है।

पहली बार एक फैसला हुआ है जिसमें मां के आधार पर बेटी को मिला अनुसूचित जाति का सर्टिफिकेट। सुप्रीम कोर्ट ने एक बेहद अहम फैसले में एक नाबालिक बच्ची को लेकर जो फैसला सुनाया उसमें सुप्रीम कोर्ट ने यह कहा कि इस नाबालिक बच्ची का जो जाति प्रमाण है वो उसकी मां को ध्यान में रखकर दिया जाएगा। एक नाबालिक की शिक्षा, उसकी मां की जाति आदि द्रविड़ के आधार पर अनुसूचित जाति यानी शेड्यूल कास्ट प्रमाण पत्र जारी करने की मंजूरी दे दी है। यह फैसला ऐसे वक्त में आया है जब शीर्ष अदालत के सामने पहले से ही कई याचिकाएं लंबित हैं। जिनमें उस परंपरागत नियम को चुनौती दी गई जिसके अनुसार बच्चे की जाति उसके पिता की जाति के आधार पर तय होती है। सुप्रीम कोर्ट में सीजीआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉय माला बागची की बेंच ने मद्रास हाईकोर्ट के उस आदेश को चुनौती देने से इंकार कर दिया जिसमें पुडुचेरी की इस बच्ची को एससी जाति प्रमाण पत्र जारी करने का निर्देश दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि अगर बच्ची को समय पर जाति प्रमाण पत्र नहीं मिला तो उसका भविष्य खराब हो जाएगा। इस दौरान सीजीआई सूर्यकांत की एक टिप्पणी ने एक नई बहस को जन्म दे दिया। उन्होंने कहा समय के साथ जब परिस्थितियां बदलती हैं तो फिर मां की जाति के आधार पर जाति प्रमाण पत्र क्यों नहीं जारी किया जा सकता।

आरक्षण सिर्फ रिजिड लीनिएज रूल्स को फॉलो करने के लिए नहीं बनाया गया था। यहां पर सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय को देते समय ध्यान रखा है 1960 के दशक का वीवी गिरी का मामला और साथ ही साथ रमेश भाई का मामला जो कि 2012 का है। इसको नजीर की तरह रेफर किया गया और सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले के द्वारा यह साबित किया कि कानून अंधा नहीं है। महत्वपूर्ण रूप से यह सिर्फ एक केस नहीं है। यह फैसला एक गेम चेंजर फैसला है।

जेपी नड्डा ने कहा-

दो इंजन वाली सरकार की जरूरत

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शनिवार को कांग्रेस के नेतृत्व वाली हिमाचल प्रदेश सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए उस पर कुप्रबंधन, भ्रष्टाचार और केंद्र द्वारा जारी की गई धनराशि का उचित उपयोग न करने का आरोप लगाया। शिमला में एक जनसभा को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के लिए केंद्र सरकार से धनराशि की कोई कमी नहीं है और उन्होंने जोर देकर कहा कि जब भी वित्तीय सहायता मांगी गई, उसे बिना किसी देरी के उपलब्ध कराया गया। नड्डा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के संबंध में, मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि केंद्र से धनराशि की कोई कमी नहीं है। जब भी धनराशि की मांग की गई, उसे दिया गया। उन्होंने कहा कि आपदा राहत, अवसंरचना, स्वास्थ्य और विकास कार्यों के लिए केंद्र द्वारा हजारों करोड़ रुपये जारी किए गए हैं, लेकिन आरोप लगाया कि राज्य सरकार इन निधियों को जमीनी स्तर पर लागू करने में विफल रही है। उन्होंने कहा कि आपदा राहत से लेकर अवसंरचना तक, हजारों करोड़ रुपये जारी किए गए। लेकिन इनका दुरुपयोग, कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार हुआ है। परियोजनाएं अधूरी हैं, धन का उपयोग नहीं हुआ है और शासन व्यवस्था अनियमित है। राज्य के प्रशासनिक कामकाज का जिक्र करते हुए नड्डा ने आरोप लगाया कि प्रमुख संस्थान प्रभावी ढंग से काम नहीं कर रहे हैं और शासन व्यवस्था ठप्प हो गई है। उन्होंने कहा कि कोषागार बंद पड़े हैं, प्रमुख प्रशासनिक पदों का प्रभार अतिरिक्त है और मंत्रिमंडल के भीतर भी समन्वय नहीं है। वर्तमान स्थिति को अतीत से गिरावट बताते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि हिमाचल प्रदेश कभी देश के सर्वश्रेष्ठ शासित राज्यों में गिना जाता था। नड्डा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश कभी सर्वश्रेष्ठ शासित राज्यों में शुमार थाय आज यह प्रशासनिक पतन से जूझ रहा है। मैं आज भी कहता हूं कि परियोजनाएं लाओ, प्रधानमंत्री मोदी समर्थन सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने भाजपा की दो इंजन वाली सरकार की मांग को दोहराते हुए कहा कि प्रभावी विकास के लिए केंद्र और राज्य के बीच समन्वय आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश को फिर से दो इंजन वाली सरकार की जरूरत है ताकि जमीनी स्तर पर धन पहुंचे और विकास दिखाई दे।

सीएम ममता बनर्जी ने मांगी माफी, जांच समिति गठित

कोलकाता में मेस्सी के आगमन पर अराजकता

कोलकाता,एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को कोलकाता के विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन (साल्ट लेक स्टेडियम) में फुटबॉल के दिग्गज लियोनेल मेस्सी के कार्यक्रम के दौरान हुई अराजकता के बाद उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए। उन्होंने अव्यवस्था पर खेद व्यक्त करते हुए अर्जेंटीना के दिग्गज खिलाड़ी, उनके प्रशंसकों और खेल प्रेमियों से माफी मांगी। मुख्यमंत्री की यह टिप्पणी तब आई जब भीड़ के खराब प्रबंधन और मेस्सी के संक्षिप्त कार्यक्रम से नाराज प्रशंसकों ने कथित तौर पर स्टेडियम के कुछ हिस्सों में तोड़फोड़ की। इस घटना के बाद राज्य सरकार ने जिम्मेदारी तय करने और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सुधारात्मक उपायों की सिफारिश करने हेतु एक जांच समिति के गठन की घोषणा की। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ग पर एक पोस्ट में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि स्टेडियम में घटी घटनाओं से वह बेहद चिंतित हैं। मुख्यमंत्री ने अपने पोस्ट में कहा कि आज साल्ट लेक स्टेडियम में हुई कुप्रबंधन की घटना से मैं अत्यंत व्यथित और स्तब्ध हूँ। मैं हजारों खेल प्रेमियों और प्रशंसकों के साथ स्टेडियम जा रही थी, जो अपने पसंदीदा फुटबॉलर लियोनेल मेस्सी की एक झलक पाने के लिए वहाँ जमा हुए थे।

उन्होंने आगे कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के लिए मैं लियोनेल मेस्सी के साथ–साथ सभी खेल प्रेमियों और उनके प्रशंसकों से तहे दिल से माफी मांगती हूँ। मैं न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) आशीष कुमार राय की अध्यक्षता में एक जांच समिति का गठन कर रही हूँ, जिसमें मुख्य सचिव और गृह एवं पर्वतीय मामलों के विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सदस्य होंगे। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि समिति घटना की विस्तृत जांच करेगी। बनर्जी ने कहा कि समिति घटना की विस्तृत जांच करेगी, जिम्मेदारी तय करेगी और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए उपाय सुझाएगी। एक बार फिर, मैं सभी खेल प्रेमियों से हार्दिक माफी मांगती हूँ। इसके बाद, कई निराश प्रशंसकों ने मंत्रियों और राजनेताओं की आलोचना करते हुए कहा कि वे मेस्सी के समय पर एकाधिकार कर रहे हैं और शाहरुख खान जैसे अभिनेताओं को लाने के वादे को पूरा करने में विफल रहे हैं। एएनआई से बात करते हुए, नाराज प्रशंसकों ने मंत्रियों और राजनेताओं पर मेस्सी का समय बर्बाद करने और शाहरुख खान जैसे फिल्मी सितारों को इस आयोजन में लाने जैसे वादों को पूरा करने में विफल रहने का आरोप लगाया।

सीडीएस अनिल चौहान ने पाकिस्तान को दिया सख्त संदेश-

बयानबाजी से नहीं, तैयारी और कार्रवाई से जीते जाते हैं युद्ध

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने पाकिस्तान को कड़ा और स्पष्ट संदेश दिया है। हैदराबाद में युवा सैन्य अधिकारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि युद्ध केवल बयानबाजी, खोखले दावों या दिखावटी मुद्रा से नहीं जीते जाते, बल्कि स्पष्ट उद्देश्य, अनुशासन और ठोस कार्रवाई से जीते जाते हैं। उनके इस वक्तव्य को पाकिस्तान पर परोक्ष लेकिन तीखा प्रहार माना जा रहा है। अपने संबोधन में उन्होंने बिना नाम लिए पाकिस्तान को निशाने पर लिया और कहा कि ऊँचे–ऊँचे दावे करने या सोशल मीडिया पर झूठी जीत का प्रचार करने से कोई युद्ध नहीं जीता जा सकता। वास्तविक शक्ति तैयारी, सही निर्णय और जमीनी स्तर पर उनके प्रभावी क्रियान्वयन से आती है। सीडीएस ने कहा कि आज दुनिया के कई हिस्सों में अस्थिरता इसलिए बढ़ रही है क्योंकि वहाँ संस्थान कमजोर हैं और जल्दबाजी में फैसले लिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे निर्णय दीर्घकालिक संघर्ष और असुरक्षा को जन्म देते हैं। इसके विपरीत भारत की ताकत उसके मजबूत संस्थानों, लोकतांत्रिक व्यवस्था और सशस्त्र बलों की पेशेवर क्षमता में निहित है। उन्होंने भारतीय सेना की सराहना करते हुए कहा कि अनुशासन, मूल्य और कर्तव्य के प्रति समर्पण देश की सुरक्षा की रीढ़ हैं। उन्होंने नए अधिकारियों से कहा कि अब वे इस गौरवशाली परंपरा के संरक्षक हैं। जनरल चौहान ने यह भी याद दिलाया कि नए अधिकारी ऐसे समय में सेवा में प्रवेश कर रहे हैं जब सुरक्षा वातावरण जटिल और चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। ऐसे माहौल में हर समय सतर्क और पूरी तरह तैयार रहना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सेना की भूमिका केवल संकट के समय तक सीमित नहीं होती, बल्कि निरंतर तैयारी और सजगता ही उसकी वास्तविक पहचान है। अपने संबोधन के समापन में सीडीएस ने अधिकारियों से उदाहरण प्रस्तुत कर नेतृत्व करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सतर्कता, तैयारी और पेशेवर दृष्टिकोण ही यह तय करेंगे कि वे शांति और युद्ध, दोनों परिस्थितियों में कितने सफल सिद्ध होते हैं। साथ ही जनरल चौहान ने कहा कि हाल के दिनों में शत्रुता की तीव्रता कुछ कम हुई है, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है और सशस्त्र बल पूरी तरह तैयार तथा सक्रिय हैं। उन्होंने कहा कि भारत की प्रतिक्रिया सोच–समझकर, संतुलित और राष्ट्रीय उद्देश्यों पर आधारित रही है। अपने भाषण में जनरल चौहान ने कहा कि आधुनिक युद्ध केवल रणभूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि साइबर, अंतरिक्ष, सूचना और संज्ञानात्मक युद्ध जैसे नए क्षेत्रों तक फैल चुका है। उन्होंने कहा कि भारत के विरोधी अक्सर दुष्प्रचार, मनोवैज्ञानिक दबाव और असममित रणनीतियों के माध्यम से इन क्षेत्रों का दुरुपयोग करते हैं। इसलिए सशस्त्र बलों का तकनीकी रूप से सक्षम और अनुकूलनशील होना अत्यंत आवश्यक है। हम आपको यह भी बता दें कि हैदराबाद स्थित वायुसेना अकादमी, डुंडीगल में आयोजित 216वीं संयुक्त स्नातक परेड को संबोधित करने के अलावा सीडीएस ने परेड की समीक्षा की और 244 फ्लाइट कैडेट्स को राष्ट्रपति कमीशन प्रदान किया। इनमें भारतीय वायुसेना की उड़ान और ग्राउंड ड्यूटी शाखाओं की 29 महिला अधिकारी भी शामिल थीं। इस समारोह में भारतीय नौसेना के 8, तटरक्षक बल के 6 और वियतनाम पीपुल्स एयर फोर्स के 2 अधिकारियों ने भी सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा कर अपने 'विंग्स' प्राप्त किए। फ्लाइंग ऑफिसर तनिष्क अग्रवाल को सर्वोच्च मेरिट के लिए चीफ ऑफ एयर स्टाफ स्वॉर्ड ऑफ ऑनर, नवानगर स्वॉर्ड ऑफ ऑनर और राष्ट्रपति पट्टिका प्रदान की गई, जबकि फ्लाइंग ऑफिसर नितेश कुमार को ग्राउंड ड्यूटी में प्रथम स्थान के लिए राष्ट्रपति पट्टिका मिली। परेड का समापन वायुसेना के विमानों और हेलीकॉप्टरों के भव्य फ्लाई–पास्ट के साथ हुआ। देखा जाये तो सीडीएस जनरल अनिल चौहान का यह वक्तव्य केवल एक सैन्य भाषण नहीं, बल्कि बदलते सुरक्षा परिदृश्य में भारत की रणनीतिक सोच का स्पष्ट प्रतिबिंब है। उन्होंने जिस सटीकता से बयानबाजी और वास्तविक शक्ति के अंतर को रेखांकित किया, वह आज के सूचना–युद्ध के दौर में विशेष रूप से प्रासंगिक है। पाकिस्तान जैसे देशों द्वारा सोशल मीडिया और दुष्प्रचार के जरिये झूठी जीत गढ़ने की प्रवृत्ति नई नहीं है, लेकिन भारत का संस्थागत संयम और पेशेवर सैन्य दृष्टिकोण उसे अलग और अधिक विश्वसनीय बनाता है।

कंबोडिया-थाईलैंड संघर्षः

भारत ने की हिंदू मंदिर की सुरक्षा की अपील

नई दिल्ली,एजेंसी। कंबोडिया और थाइलैंड के बीच जारी सीमा संघर्ष के बीच प्रीह विहार हिंदू मंदिर को नुकसान पहुंचने की खबरों पर भारत ने गहरी चिंता जताई है। विदेश मंत्रालय ने बयान जारी दोनों पक्षों से संयम बरतने, हिंसा रोकने और हालात को और खराब न होने देने की अपील की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने इस क्षति को दुखद व चिंताजनक बताते हुए कहा यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल मानवता की साझी सांस्कृतिक विरासत है और भारत इसकी संरक्षा में लंबे समय से सहयोग देता आया है। उन्होंने कहा, सरकार को मंदिर की सुरक्षा हर हाल में करनी चाहिए। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया कि थाईलैंड–कंबोडिया ने गोलीबारी रोकने पर सहमति जताई है। ट्रंप ने बताया कि उन्होंने दोनों देशों के नेताओं से बातचीत की, जिसके बाद यह निर्णय लिया गया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा,दोनों देश शांति और अमेरिका के साथ व्यापार जारी रखने के लिए तैयार हैं।

जैसे इजराइल ने हिज्बुल्ला को सबक सिखाया उसी तरह सुरक्षा बलों ने माओवादियों को अपने जाल में फँसाया

नई दिल्ली, एजेंसी। जिस तरह इजराइल ने हिजबुल्ला की कमर तोड़ने के लिए उसके पेजरों और वॉकी–टॉकी में विस्फोटक भर दिए थे, उसी तरह भारतीय सुरक्षा बलों ने माओवादियों की रीढ़ तोड़ने के लिए उनके ही संचार उपकरणों को अपना हथियार बना दिया था। फर्क सिर्फ इतना है कि यहाँ धमाके नहीं हुए, बल्कि चुपचाप ट्रैकर और चिप्स फिट कर दिए गए थे और माओवादी संगठन को इसकी भनक तक नहीं लगी। हम आपको बता दें कि हाल ही में आत्मसमर्पण करने वाले शीर्ष माओवादी नेताओं टक्केलपल्ली वासुदेव राव उर्फ अशन्ना और मल्लोजुला वेंकटेश्वर राव उर्फ सोनू से पूछताछ में खुलासा हुआ है कि प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) का पूरा संचार और सप्लाई नेटवर्क भारतीय खुफिया एजेंसियों की निगरानी में था। बताया जा रहा है कि ड्रोन से 'आधुनिक युद्ध' की तैयारी कर रहा माओवादी संगठन असल में अपने ही उपकरणों के जरिए बेनकाब होता चला गया और यही उसकी सबसे बड़ी रणनीतिक हार साबित हुई।

हम आपको बता दें कि टक्केलपल्ली वासुदेव राव उर्फ अशन्ना और मल्लोजुला वेंकटेश्वर राव उर्फ सोनू से हुई पूछताछ की रिपोर्टों से प्रतिबंधित संगठन सीपीआई (माओवादी) की रणनीतियों और कमजोरियों पर कई अहम खुलासे हुए हैं। इन रिपोर्टों के मुताबिक माओवादियों ने सुरक्षा बलों की रेकी और उन पर हमले के लिए ड्रोन के इस्तेमाल की संभावनाएं टटोलने की कोशिश की थी। हालांकि, संगठन बड़ी संख्या में ड्रोन हासिल नहीं कर सका जिसके चलते 'ड्रोन युद्ध' की उसकी योजना कागजों और सीमित परीक्षणों से आगे नहीं बढ़ पाई। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक पूछताछ में सामने आया है कि दक्षिण बस्तर इलाके में माओवादियों ने ड्रोन के सीमित ट्रायल रन किए थे।

मनरेगा को लेकर प्रियंका का दावा

नाम बदलने में सरकार के बहुत सारे संसाधन होंगे खर्च

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने शनिवार को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरईजीए) का नाम बदलकर पूज्य बापू ग्रामीण रोजगार योजना रखने की खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि नाम बदलने की प्रक्रिया में सरकार के बहुत सारे संसाधन खर्च हो रहे हैं और यह अनावश्यक है। पत्रकारों से बात करते हुए कांग्रेस सांसद ने कहा कि एमजीएनआरईजीए योजना का नाम बदलने के पीछे का तर्क उन्हें समझ नहीं आ रहा है, जिससे अनावश्यक खर्च हो रहा है। प्रियंका गांधी ने कहा कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसके पीछे क्या मानसिकता है। पहली बात तो यह महात्मा गांधी का नाम है, और जब इसे बदला जाता है, तो सरकार के संसाधन फिर से इस पर खर्च होते हैं। दफ्तरों से लेकर स्टेशनरी तक, सब कुछ का नाम बदलना पड़ता है, इसलिए यह एक बड़ी और खर्चीली प्रक्रिया है।

तेरी झलक अशरफी श्रीवल्ली... जमकर थिरके छात्र

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज के मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (MNNIT) में आयोजित वार्षिक सांस्कृतिक एवं तकनीकी महोत्सव 'कलरव आविष्कार 2025' के छठवें दिन शुक्रवार को रंगारंग कार्यक्रमों की धूम रही। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण बॉलीवुड के मशहूर सिंगर जावेद अली रहे। जिनकी आवाज ने छात्रों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने मां तुझे सलाम, सिर्फ तुम तक, तुम मिले तो जादू छा गया सहित अपने लोकप्रिय गीतों की शानदार प्रस्तुति दी, जिस पर हजारों छात्र झूमते नजर आए।

प्रयागराज में प्रवीण नाट्योत्सव, नागरदोला नाटक का सफल मंचन, दर्शकों को किया प्रभावित

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में प्रवीण सांस्कृतिक मंच द्वारा आयोजित प्रवीण स्मृति नाट्योत्सव 2025 के तहत नाटक श्नागरदोलाश का सफल मंचन किया गया। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र सभागार में शाम 6 बजे शुरू हुई इस प्रस्तुति ने दर्शकों को प्रेम, संघर्ष और सामाजिक विसंगतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। नाटक का निर्देशन बिजेंद्र कुमार टांक ने किया। उन्होंने कथ्य और मंचीय शिल्प के जरिए प्रेम की उस अमर शक्ति को दर्शाया, जिसे समय या समाज की कठोर व्यवस्था मिटा नहीं सकती। मंच से गूंजे आरंभिक शब्द श्प्रेम न बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट बिकाय३६ ने दर्शकों को भावनात्मक रूप से नाटक से जोड़ा। कहानी दुर्गापुर के दंगल से शुरू होती है, जहां पहलवान चूहड़ की जीत का जश्न मनाया जा रहा है। चूहड़ को उस प्रेम के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है जो अत्याचार और बंधनों के बावजूद जीवित रहता है। नाटक जाति, हिंसा और समय द्वारा प्रेम को समाप्त करने के सवाल पर केंद्रित है, जिसका उत्तर श्नहींश के रूप रूप में सामने आता है। रेशमा और चूहड़ की प्रेम कथा को पुनर्जन्म के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए, नाटक ने समाज की रूढ़िवादी मानसिकता पर वार किया। रेशमा की भूमिका में अपराजिता कुमारी ने अपने सशक्त अभिनय से दर्शकों की सराहना बटोरी। मो. जफ्फर आलम ने चूहड़मल के चरित्र को दमदार उपस्थिति और प्रभावशाली संवाद अदायगी से जीवंत कर दिया। अन्य कलाकारों ने भी अपने पात्रों के साथ न्याय करते हुए प्रस्तुति को मजबूत बनाया। तकनीकी पक्ष में मंच निर्माण, प्रकाश, संगीत और ध्वनि प्रभावों ने प्रस्तुति को और प्रभावशाली बनाया। नाटक श्नागरदोलाश ने दर्शकों के मन में प्रेम की अमरता और मानवीय संवेदना का गहरा संदेश छोड़ा, जिसकी दर्शकों ने देर तक तालियों के साथ सराहना की।

प्रयागराज में यूरेनियम युक्त पानी पी रहे लोग

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में रहने वाले लोग यूरेनियम युक्त पानी पी रहे रहे है। इसका खुलासा नैनी के रहने वाले एक साइंटिस्ट ने अपने रिसर्च में किया है। इसके बारे में जानने के लिए भास्कर टीम ने साइंटिस्ट पद्मश्री डॉक्टर अजय कुमार से मुलाकात की और इस बारे में पूरी जानकारी ली। घरों में आने वाले और वेस्ट पानी पर रिसर्च किया हैं। जांच की रिपोर्ट में पता लगा कि जो पानी हम बोरिंग से ले रहें हैं उसमे यूरिनियम की मात्रा काफी अधिक हैं। अगर हम त्व से फिलटर कर रहें हैं तो त्व के वेस्ट पानी मे यूरिनियम की मात्रा और भी ज़्यादा बढ़ जाती है। जो नाले नालियो के जरिये मिट्टी में पहुंचकर कर खेतों में फल और सब्जियों को प्रभावित कर रही हैं। यह हर व्यक्ति के लिए एक स्लो प्वाइजन हैं। उन्होंने इस जांच ये सारी रिपोर्ट सरकार को भेज दी हैं। प्रयागराज के समुद्री जीव वैज्ञानिक पद्मश्री डॉ अजय कुमार सोनकर नें पानी में यूरिनियम की जांच के लिए सबसे पहले दिल्ली के पानी पर शोध किया। दिल्ली के नजफ गढ़, रोहिणी और द्वारिका में उन्होंने अपनी टीम के साथ अलग अलग घरों में आने वाले पानी का सैम्पल लेकर उसकी जांच की। जांच में एक लीटर पानी में काफी ज़्यादा यूरिनियम मिला। जबकि एक लीटर मे 30, माइक्रोग्राम यूरिनियम मिलना नॉर्मल हैं। शोध मे पानी में यूरिनियम की मात्रा इतनी अधिक पाई गई। उन्होंने घरों से आने वाले पानी और वेस्ट पानी का सैम्पल लेकर जांच की। जिसमें यूरिनियम की मात्रा कम हैं, जबकि जो पानी वेस्ट निकल कर नालियो में बह रहा उसमें यूरिनियम की मात्रा बहुत अधिक हैं। गंगा और यमुना के पानी नहीं मिला यूरेनियम डॉ अजय सोनकर नें बताया की पानी मे यूरिनियम आने का मुख्य सोर्स खनन हैं। जमीन के अंदर हर लोहा, कास्टरन, सोना और यूरिनियम जैसी चीजें और खनन होने से ये ऊपर आकर फैलते हैं। खनन से जमीन के नीचे भी फैल रहें हैं। जिससे वो पानी मे भी घुल जाते हैं।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं :- 8420252026 दिनांक : 12.12.2025

ई-निविदा सूचना

मण्डल रेल प्रबन्धक/इंजीनियरिंग/उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये निर्धारित प्रपत्र पर ई-निविदा दिनांक 05.01.2026 तक आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण निम्न प्रकार है:

नि0 सं0 : 210	जेम बिड सं0 : GEM/2025/B/6989876 दिनांक 12.12.2025
कार्य का विवरण : सहायक मंडल अभियंता/लाइन/प्रयागराज एवं सहायक मंडल अभियंता/फतेहपुर के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत ठण्ड के मौसम के दौरान आपातकालीन मरम्मत कार्यों तथा अन्य सम्बंधित कार्यों सहित सुरक्षा के लिए ट्रैक पर रात्रि गश्त का कार्य।	
अनुमानित मूल्य (रू) : 91,50,336.00	अग्रिम धन राशि मूल्य (रू) : 1,83,010.00
कार्य समापन की अवधि : 03 माह	निविदा खुलने की तिथि : 05.01.2026
पात्रता मापदंड के अर्न्तगत सिमिलर कार्य । : कोई भी पी-वे का कार्य	

नोट :- 1. आनलाइन निविदा खुलने की तिथि 05.01.2026 तक प्रस्तुत की जा सकती है। 2. उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट www.gem.gov.in पर निविदा खुलने की तिथि 05.01.2026 तक उपलब्ध है।

2408/25(AS)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

दरोगा-जवान को पीटा, धमकाया, फिर भी बगैर एफआईआर छोड़ा

प्रयागराज में खुद को मंत्री का समर्थक बता रहे प्रॉपर्टी डीलर का भौकाल

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में प्रॉपर्टी डीलर ने खुद को कैबिनेट मंत्री नंदगोपाल 'नंदी' का समर्थक बताते हुए दरोगा और सिपाही को पीट दिया। कहा– मंत्री तुम लोगों की खबर लेंगे। शुक्रवार रात कार की टक्कर की वजह से दो गुटों में झगड़ा हुआ था।

झगड़े की सूचना पर पहुंचे पुलिसकर्मियों ने मामला शांत कराने की कोशिश की, तो प्रॉपर्टी डीलर कमल कमलेश गुप्ता उर्फ लाला भिड़ गया। उसने बहस की और हाथ उठाया। उसके साथ कई और लोग भी थे।

पूरे मामले का 1 मिनट 20 सेकेंड का वीडियो सामने आया है। इसमें कुछ लोग सिपाही का कॉलर पकड़े हैं। वह खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा, जबकि दरोगा बीच–बचाव कर रहा। दबंगों ने दोनों को थप्पड़ मारे।

मारपीट और हंगामे की सूचना पर पुलिस अधिकारी पहुंचे। भीड़ को शांत कराने के बाद दरोगा और सिपाही को वहां से हटाया गया। हंगामे के बाद 6 थानों की फोर्स पहुंची और 15 लोगों को हिरासत में लिया गया।

सभी को कोतवाली ले जाया गया, जहां साढ़े तीन घंटे पंचायत हुई। इसके बाद पुलिस ने बिना किसी कार्रवाई के सभी को छोड़ दिया। घटना चंद्रलोक चौराहे की है। यह इलाका व्यापारियों का गढ़ है। यहां से मंत्री नंदी का घर 200 मीटर दूर है।

कमलेश गुप्ता उर्फ लाला मुट्ठीगंज का रहने वाला है। वह प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करता है। खुद को भाजपा नेता और मंत्री नंदगोपाल नंदी का समर्थक बताता है। कुछ लोग कमलेश को नंदी का रिश्तेदार (मौसेरा भाई) भी बताते हैं। हालांकि, मंत्री के परिवार की तरफ से इसकी कोई पुष्टि नहीं की गई।

शुक्रवार देर रात कमलेश गुप्ता कार से कहीं जा रहा था। चंद्रलोक चौराहे पर उसकी कार दूसरी गाड़ी से टकरा गई। इससे दोनों पक्षों में कहासुनी होने लगी। दूसरी गाड़ी में सवार लोगों ने डायल 112 पर फोन कर पुलिस बुला ली।

आरोप है, नंदी के समर्थकों ने पुलिसकर्मियों से बदसलूकी की। इसके बाद चौकी प्रभारी बहादुरगंज विवेक कुमार पहुंचे, तो उनसे भी कहासुनी हो गई। पुलिस ने दोनों गाड़ियों को जब्त करना चाहा, तो कमलेश गुप्ता हंगामा करने लगा।

उसने पुलिसकर्मियों से धक्का–मुक्की की। इसके बाद पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। देर रात कमलेश के समर्थक सड़क पर उतर आए। लोकनाथ चौराहे से लेकर सुलाकी चौराहे तक, जहां नंदी का घर है, भारी भीड़ जमा हो गई।

कोतवाली, मुट्ठीगंज, कीडगंज, करेली, सिविल लाइंस, नैनी समेत अन्य थानों की फोर्स मौके पर पहुंची। भीड़ को हटाने के लिए पुलिस टीम ने लाठी फटकारीं। इसके बाद लोग वहां से हटे। पुलिस मारपीट के आरोप में कमलेश गुप्ता उर्फ लाला और 14 लोगों को थाने ले गई। हालांकि बाद में सभी को छोड़ दिया गया।

भीड़ से आवाज आई : बनाओ वीडियो, गलत कर रहा है, मार रहा है। खून निकल रहा है, चेन लूट ली।

सिपाही : चेन तो हाथ में है।

भीड़ : तो लूटे हो.... तुम लोगों की वीडियो बन गया है।

सिपाही : चेन टूट गई है, लूटी नहीं।

भीड़ : तो तुम्हारे हाथ में कैसे आ गई, टूटी तो है? तुम लोग आम आदमी से मारपीट कर रहे।

सिपाही : टूट गई है।

भीड़ : सब बन रहा है, सब बन रहा है। अभी मंत्री जी तुम लोगों की खबर लेंगे बेटा।

सिपाही : अरे टूट गई है तो सुरक्षा में नहीं लेंगे३?

भीड़ (अपशब्द कहते हुए) : तुम अपने हाथ में लिए हो। इसी बीच एक व्यक्ति सिपाही को थप्पड़ जड़ देता है। तभी आवाज आती है– ये मार खाएगा३इसी बीच कुछ और लोग थप्पड़ मारते हैं। एक व्यक्ति मंत्री बोलते हुए सुनाई पड़ता है।

भीड़ से लोग कहते हैं : आपको समझना चाहिए पहले, आप आम जनता को कैसे मार सकते हैं? इसी बीच भीड़ से एक व्यक्ति पुलिसवालों की तरफ इशारा करते हुए कहता है– बहादुरगंज वाले लाला को मारिनि ई... यही–यही, जंजीर छीन लिहिन।

सिपाही (भीड़ से खुद को छुड़ाने की कोशिश करते हुए) : आएं... जंजीर।

भीड़ : लाला, इनको बहादुरगंज ले चलो... लाला।

भीड़ : बनाओ वीडियो, बनाओ३इस बीच पुलिसकर्मी खुद को भीड़ से छुड़ाने की कोशिश करते हुए कुछ कहते नजर आते हैं, जो साफ सुनाई नहीं देता।

भीड़ से एक व्यक्ति : हाथ क्यों छोड़ा, हाथ क्यों छोड़ा, बोलना चाहिए था न आपको।

मंत्री नंदगोपाल नंदी के प्रवक्ता बालाजी केसरवानी ने कहा– जिस क्षेत्र में घटना हुई, वह मंत्रीजी के घर से थोड़ी दूरी पर है। पुलिस और पब्लिक के बीच मारपीट हुई, तो इसमें मंत्रीजी का नाम कहां से आ गया। मंत्रीजी कभी भी किसी गलत काम का समर्थन नहीं करते, चाहे वह खास समर्थक हो या रिश्तेदार।

प्रयागराज में रेस्टोरेंट की आड़ में चल रहा हुक्काबार

5 दिन पहले मारपीट, अब हुक्का पिलाने का वीडियो आया सामने

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज के सिविल लाइंस में पत्रिका चौराहे के पास स्थित रेस्टोरेंट एक बार फिर चर्चा में है। पांच दिन पहले इसी रेस्टोरेंट में कर्मचारी से मारपीट, गाली–गलौज, लूट और जान से मारने की धमकी का मामला सामने आया था, जबकि अब उसी रेस्टोरेंट के भीतर हुक्का पिलाने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है।

वायरल वीडियो करीब 22 सेकेंड का बताया जा रहा है, जिसमें रेस्टोरेंट के भीतर एक युवक बैठकर हुक्का पीता हुआ नजर आ रहा है। वीडियो सामने आने के बाद रेस्टोरेंट की गतिविधियों को लेकर सवाल खड़े हो गए हैं।

रेस्टोरेंट के कर्मचारी अखिल चौधरी ने 9 दिसंबर को सिविल लाइंस थाने में दर्ज कराई एफआईआर में आरोप लगाया था कि शांतिपुरम निवासी एक युवक अपने 10 से 11 साथियों संग लगातार तीन दिनों तक रेस्टोरेंट में आकर गाली–गलौज और मारपीट करता रहा।

5, 6 और 7 दिसंबर को यह युवक रेस्टोरेंट में आए और उससे मारपीट गालीगलौज की। पिस्टल दिखाकर जान से मारने की धमकी दी। सोने की चेन और नकदी लूट ली।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, पांच दिन पहले रेस्टोरेंट में हुआ विवाद हुक्का सर्व कराने को लेकर ही शुरू हुआ था। कर्मचारियों द्वारा हुक्का देने से इनकार करने पर हंगामा हुआ, जो बाद में मारपीट और धमकी में बदल गया। अब वायरल हुआ वीडियो इस आशंका को और मजबूत करता है कि रेस्टोरेंट में चोरी–छिपे हुक्का परोसा जा रहा था। बता दें कि रेस्टोरेंट और कैफे में हुक्का बार का संचालन पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसके बावजूद रेस्टोरेंट की आड़ में अवैध रूप से हुक्का परोसने के मामले सामने आते रहे हैं। सिविल लाइंस पुलिस इससे पहले भी कई रेस्टोरेंट में छापा मारकर अवैध हुक्का बार पकड़ चुकी है। इन मामलों में संचालकों के खिलाफ मुकदमे दर्ज हुए और गिरफ्तारियां भी की गईं। हुक्का पिलाने का वीडियो वायरल होने के बाद अब सिविल लाइंस पुलिस इस पूरे मामले की जांच में जुट गई है।

प्रयागराज में पंचायतों की लापरवाही पर डीएम का सख्त कदम

प्रयागराज (संवाददाता)। जिले की ग्राम पंचायतों में विकास कार्यों की लापरवाही पर ऑडिट में आई आपत्तियों के मामले में डीएम मनीष कुमार वर्मा ने कड़ा रुख अपनाया है। प्रधानों और पूर्व प्रधानों को बार–बार नोटिस दिए गए, लेकिन किसी ने भी जवाब नहीं दिया। अब ऐसे लोगों को अगले प्रधान चुनाव के लिए अनापत्ति प्रमाणपत्र (NOC) नहीं मिलेगा।पंचायतों में सभी विकास कार्य प्रधानों के माध्यम से ही कराए जाते हैं और भुगतान भी उनके डोंगल से होता है। पिछली और वर्तमान पंचायतों के कई कार्यों के ऑडिट में अनियमितताएं पाई गईं। डीपीआरओ रवि शंकर द्विवेदी ने संबंधित प्रधानों व पूर्व प्रधानों को कई नोटिस जारी किए, मगर कोई संतोषजनक जवाब नहीं आया। डीपीआरओ ने डीएम को पत्र लिखकर मार्गदर्शन मांगा, जिस पर डीएम ने साफ आदेश जारी कर दिया। डीएम मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि जवाब न देने वालों को चुनाव लड़ने का मौका नहीं मिलेगा। इससे पंचायत स्तर पर पारदर्शिता बढ़ेगी और विकास कार्यों में लापरवाही पर अंकुश लगेगा।जिले में सैकड़ों पंचायतें हैं, जहां ऐसी आपत्तियां आम हैं। अधिकारियों का मानना है कि यह कदम भविष्य में जवाबदेही सुनिश्चित करेगा।

माघ मेला विश्व हिंदू परिषद शिविर में हुआ भूमि पूजन

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में आगामी माघ मेले की तैयारियां तेज हो गई हैं। इसी कड़ी में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) इस बार भी मेला क्षेत्र में अपना शिविर लगाएगा। इसके लिए परिषद को परेड ग्राउंड क्षेत्र में भूमि आवंटित की गई है। शनिवार को शिविर स्थापना से पूर्व विधि–विधान से भूमि पूजन किया गया, जिसमें विहिप के पदाधिकारी, संत–महात्मा और अन्य प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भूमि पूजन संपन्न होने के बाद शिविर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। विश्व हिंदू परिषद के प्रांत सह मंत्री सत्य प्रकाश सिंह ने बताया कि शिविर का निर्माण एक सप्ताह के भीतर पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि विहिप का यह शिविर 1 जनवरी से 2 फरवरी तक सक्रिय रहेगा, जिसमें विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और संगठनात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

सत्य प्रकाश सिंह के अनुसार, इस वर्ष भी विहिप के शिविर में संत सम्मेलन मुख्य आकर्षण होगा। इस सम्मेलन के माध्यम से समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार–विमर्श किया जाएगा। उन्होंने बताया कि माघ मेले के दौरान संगठन के वर्षभर के कार्यक्रमों की रूपरेखा भी यहीं तय की जाएगी। इसके अतिरिक्त, समाज में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से कई वैचारिक और सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे।

उन्होंने यह भी बताया कि संत सम्मेलन में धर्मांतरण और लव जिहाद जैसे मुद्दों पर भी चर्चा होगी। इसके अतिरिक्त, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। विहिप की सहयोगी इकाइयां दुर्गा वाहिनी और मातृशक्ति भी शिविर में अपने–अपने कार्यक्रम आयोजित करेंगी।

भूमि पूजन कार्यक्रम में विहिप के प्रांत प्रचारक रमेश जी और काशी प्रांत के अध्यक्ष के. पी. सिंह भी उपस्थित थे। सभी संतों और पदाधिकारियों ने विधि–विधान से पूजन कर माघ मेले के दौरान शिविर के सफल संचालन की कामना की।

उल्लेखनीय है कि संगम की रेती पर माघ मेला 3 जनवरी को पौष पूर्णिमा के पहले स्नान पर्व से शुरू होगा और 15 फरवरी को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान पर्व तक चलेगा।

निर्माणाधीन अस्पताल सील करने का आदेश रद

प्रयागराज (संवाददाता)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने महराजगंज के सोनौली में निजी अस्पताल को बिना कानूनी प्रक्रिया अपनाए व ठोस आधार के सिर्फ शिकायत पर सील करने की कार्रवाई पर संबंधित अधिकारियों को फटकार लगाई है। कोर्ट ने मनमानी सीलिंग कार्रवाई के कारण राज्य सरकार पर 20 हजार रुपये का हर्जाना लगाया है और तत्काल अस्पताल का सील हटाने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा हर्जाना राशि में दस हजार याची को और शेष विधिक सेवा समिति को जमा करने का आदेश दिया और कहा सरकार जिलाधिकारी की जांच पर हर्जाना दोषी अधिकारियों से वसूल सकती है। कोर्ट ने नियमानुसार याची के अस्पताल के पंजीकरण अर्जी पर निर्णय लेने का आदेश दिया है।और कहा कि यदि अर्जी निरस्त होती है तो कारण स्पष्ट किया जाय।और याची को अस्पताल की कमी दूर करने को कहा जाय। यह आदेश न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति अनीश कुमार गुप्ता की खंडपीठ ने डॉ. नरेश कुमार गुप्ता की याचिका पर दिया है। याची एक निर्माणाधीन अस्पताल के संचालक हैं। अस्पताल के एक कर्मचारी ने 3 जुलाई 2025 को पुलिस में शिकायत की कि अस्पताल में सरकारी दवाएं और एक्सपायर्ड लैब किट मौजूद हैं। इसी शिकायत के आधार पर थाना सोनौली ने जिला मजिस्ट्रेट को एक रिपोर्ट भेजी, जिसमें अस्पताल के फर्जी दस्तावेजों से चलने और बिना पंजीकरण के संचालित होने का आरोप लगाया गया। इसके बाद 5 जुलाई को एक निरीक्षण दल ने अस्पताल का दौरा किया और 6 जुलाई को दी गई रिपोर्ट के आधार पर परिसर सील कर दिया गया। इसे कार्रवाई को याची ने हाईकोर्ट में चुनौती दी।छापे के दौरान यह नहीं देखा गया कि अस्पताल चालू भी है या नहीं,क्या कोई मरीज भी था। याची अधिवक्ता ने दलील दी कि अस्पताल निर्माण के अंतिम चरण में था और पूरा होने पर पंजीकरण के लिए आवेदन किया जाना था। उन्होंने बताया कि पंजीकरण के लिए एक आवेदन किया गया था, जिसे प्रदूषण नियंत्रण प्रणाली, बायोमेडिकल कचरे के निस्तारण और अग्निशमन प्रणाली की कमी के आधार पर अस्वीकार कर दिया गया।

प्रयागराज में नैनी सेंट्रल जेल गेट पर खड़ी बाइक चोरी

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज के नैनी सेंट्रल जेल के मुख्य गेट पर खड़ी जेल वार्डर की बाइक चोरी होने का मामला सामने आया है। जेल गेट से बाइक चोरी होना जेल की सुरक्षा पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। दिन दहाड़े बाइक चोरी होने के बाद से जेल के अधिकारी और कर्मचारी काफी परेशान है। हालांकि इस बाइक चोरी की पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है। जिसमें देखा गया है कि एक युवक किस तरह से बाइक के पास टहलता रहा था और पलक झपकते ही बाइक उड़ा दिया। काफी खोजबीन के बाद घटना की तहरीर थाने पर वार्डर ने दी है। मूल रूप से कानपुर देहात के रहने वाले पुष्पराज सिंह सेंगर केंद्रीय कारागार नैनी में तैनात जेल वार्डर के पद पर तैनात है। वह जेल अधीक्षक के वाहन चालक है। वह जेल के कैंपस में ही परिवार के साथ रहते है। गुरुवार को वह सेंट्रल जेल गए हुए थे। वह गेट के समीप पहुंचे तो उन्हें जेल के हेड वार्डर सुरेंद्र कुमार मिले और सड़क तक छोड़ने के लिए कहा। इसके बाद वह अपनी बाइक से उन्हें छोकर वापस लौट रहे तो एक नैनी थाने के सिपाही अखिलेश से बात होने लगी। वह अचानक से पहुंचे और जेल के मुख्य गेट के बाहर अपनी बाइक स्प्लेंडर प्लस न्च 77म् 4399 खड़ी कर जेल के अंदर चले गए। जब वापस बाहर आए तो उनकी बाईक गायब थी। काफी देर परेशान होने के बाद भी उनकी बाइक भी मिल सकी। घटना गुरुवार की दोपहर करीब 1.42 की है। जब पुष्पराज जेल के अंदर गए। उस दौरान एक युवक सफेद रंग की टीशर्ट और हॉफ लोवर में गेट के पास पहुंचा और कुछ देर तक टहलता दिखाई दिया।

हरियाली को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय मे रोपे गये पौधे

करमा। प्रयागराज। वृक्ष हमारे जीवन का आधार होते हैं बिना पेड़ों के जीवन संभव नहीं हैं। वृक्ष हमें जीवन के साथ– साथ जीवनोपयोगी फल, फूल, औषधि, लकड़ी इत्यादि प्रदान करते है बिना पेड़ों मानव ही अपितु सम्पूर्ण सृष्टि के किसी भी प्राणी का जीवन संभव नहीं हैं अतः सभी लोगों को अपने जीवन मे अधिक से अधिक वृक्षारोपण एवम संरक्षण करने का अटूट प्रयत्न करना चाहिए उक्त बातें केन्द्रीय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रनेता अभिषेक सिंह पटेल नें शनिवार को करमा क्षेत्र श्री एस. एन. पटेल इंटर कालेज बगहा बेलसारा मे वृक्षारोपण के दौरान व्यक्त किये इस अवसर विधालय के प्रधानाचार्य हरिओम यादव नें भी उपस्थित छात्राओं से अपने जीवन मे कम से कम पांच पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित किये।संस्थान के संचालक कुलदीप प्रजापति पौधों से होने विभिन्न लाभप्रद तथ्यों के विषय मे अवगत किये।नीम, अर्जुन, जामुन, अमलतास, मधुकामिनी इत्यादि पौधे विद्यालय परिसर मे रोपे गये।उक्त अवसर पर शिक्षक हरि ओम यादव,नरेंद्र कुमार,राघवेन्द्र सिंह,सूरजमणि वर्मा सहित आँचल पटेल,किरन पटेल,सोनाक्षी पटेल,संजना पटेल,अंजली पटेल इत्यादि छात्राएं मौजूद रहीं।

बिहार ब्लाक के बिहरिया ग्राम में लगी लोकपाल की ग्राम चौपाल’

’ग्रामीणों की माँग पर तालाब व प्राचीन नाले की सफाई का दिया निर्देश’

प्रतापगढ़.। लोकपाल मनरेगा समाज शेखर की अध्यक्षता में बिहार ब्लाक के बिहारिया ग्राम पंचायत में ग्राम चौपाल का भव्य आयोजन किया गया। लोकपाल ने ग्रामीणों , मजदूरों व आम नागरिकों की शिकायतों को सुना और तत्काल प्रधान व ग्राम पंचायत को समाधान के निर्देश दिया। आजीविका मिशन से जुड़ी महिला समूह की सदस्यों के साथ चर्चा कर संवाद स्थापित किया गया। लोकपाल समाज शेखर ने ग्रामीणों की माँग पर ग्राम पंचायत बिहारिया व ग्राम पंचायत बरना के प्रधान को नालॉ की सफाई मनरेगा द्वारा कराये जाने का निर्देश दिया। वहीं ईदगाह से रेलवे लाइन तक चल रहे कार्य का निरीक्षण किया गया. लोकपाल ने मजदूरों से वार्ता कर उनकी समस्या को सुना। प्राथमिक विद्यालय स्थित तालाब की सफाई व पुनरोद्धार की माँग लोगो ने की बताया की कभी इस तालाब का पानी लोग पीते थे अब गंदगी है और पट गया है जिस पर लोकपाल ने तालाब को अमृत तालाब के रूप में विकसित करने को कहा तब ग्राम प्रधान ने अवगत कराया की प्रस्ताव हुआ है शीघ् कार्य योजना ब्लाक में प्रस्तुत की जायेगी। लोकपाल समाज शेखर ने ग्राम प्रधान बरना तुफैल फ़ारुकी व ग्राम प्रधान बिहरिया मो आवेश को प्राचीन नालॉ की सफाई कराके जल प्रबन्धन कार्य को आदर्श कार्य के रूप में करें. साथ ही सरकार की कल्याण कारी योजनाओं से ग्राम के लोगो को लाभांवित करने का निर्देश दिया। इस अवसर पर कृषि विभाग से पधारे संजीव शर्मा ने पी एम किसान निधि व पंजीकरण के साथ साथ खेती किसानी से जुड़ी योजनाओं की जानकारी दी। वहीं आजीविका मिशन की महिलाओं से लोकपाल ने वार्ता करके उनकी समस्या को सुना और ग्राम पंचायत व ब्लाक को सहयोग हेतु आवश्यक निर्देश दिया।

हँसते हुए गुलाब

(कुण्डलिया)

हँसते हुए गुलाब ने, अदभुत किया कमाल।
उत्तर उनके बन गए, जो थे कभी सवाल।
जो थे कभी सवाल, उन्हीं को अपना कहकर।
खुशबु का उपहार, दिया है उनको जमकर।
सुन लो कहें प्रदीप,चले जो अपने रस्ते।
संकट को कर पार, रह रहे हँसते–हँसते।।
शूलों के आधार पर, हँसते फूल गुलाब।
खुशबू भर संसार में,बने सुगन्धित आब।
बने सुगन्धित आब,रूप औषधि का धरके।
जीवन का हर रंग, सुरक्षित खुद में करके।
सुन लो कहें प्रदीप, हक़ीक़त ख़्वाबों के।
लगे मुलायम दूब, बताते शूलों के।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

अकबर ने मांगा लाल किला और कुतुब मीनार

पीएमओ को लिखा खत, बोला–खाली करवाओ

लखनऊ, (संवाददाता)। अलीगढ़ जिले से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है, जिसने प्रशासन से लेकर पुलिस तक को चौंका दिया है। अलीगढ़ महानगर के बन्ना देवी इलाके में रहने वाले एक प्लंबर ने प्रधानमंत्री कार्यालय के आईजीआरएस पोर्टल पर पत्र भेजकर खुद को देश की ऐतिहासिक धरोहरों दिल्ली और आगरा के लाल किले तथा कुतुब मीनार का मालिक और वारिस बताया है।उसने इन धरोहरों को खाली कराकर अपने सुपुर्द करने या फिर प्रधानमंत्री से मुलाकात कराने की मांग की है।बन्ना देवी निवासी अकबर नामक व्यक्ति ने सितंबर और नवंबर माह में आईजीआरएस पोर्टल पर दो हाथ से लिखे पत्र भेजे। इन पत्रों में उसने दावा किया कि दिल्ली और आगरा के लाल किले तथा कुतुब मीनार उसकी संपत्ति हैं। पत्र में लिखा गया कि या तो इन ऐतिहासिक इमारतों को खाली कराकर उसे सौंप दिया जाए या फिर वह जितनी धनराशि मांगे, उतनी उसे प्रदान की जाए। उसने प्रधानमंत्री से सीधे मुलाकात कराने की मांग रखी। अकबर ने अपने एक पत्र में खुद की जान को खतरा होने की बात भी लिखी है। उसने दावा किया कि देश के अलग–अलग राज्यों के 10 से अधिक बड़े विपक्षी नेताओं से उसे जान का खतरा है। पत्र में जिन नेताओं के नामों का उल्लेख किया गया है, वे सभी देश की राजनीति में जाने–पहचाने चेहरे बताए जा रहे हैं।पीएमओ को मिले इन पत्रों को गंभीरता से लेते हुए जांच के लिए अलीगढ़ पुलिस को भेजा गया। बन्ना देवी थाना पुलिस ने मामले का सत्यापन शुरू की। पुलिस महकमे में भी हलचल मच गई, क्योंकि मामला सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय और देश की ऐतिहासिक धरोहरों से जुड़ा हुआ था।मामले की जांच सीओ द्वितीय कमलेश कुमार को सौंपी गई। पुलिस ने पत्र भेजने वाले अकबर को थाने बुलाकर पूछताछ शुरू की। शुरुआती बातचीत में सामने आया कि अकबर पेशे से प्लंबर का काम करता है और बन्ना देवी इलाके में ही रहता है।

प्रवीण स्मृति नाट्योत्सव 2025, प्रयागराज

प्रयागराजसप्रवीण सांस्कृतिक मंच द्वारा आयोजित प्रवीण स्मृति नाट्योत्सव 2025 के अंतर्गत आज भिखारी ठाकुर की कालजयी लोकनाट्य रचना ‘गबरघिचोर’ का सशक्त और भावनात्मक मंचन किया गया। यह प्रस्तुति ग्रामीण समाज, पलायन, स्त्री की विवशता और नैतिकता के गहरे सवालों को जीवंत रूप में सामने लाती है। नाटक की कथा उस ग्रामीण यथार्थ को उजागर करती है जहाँ रोजगार की तलाश में पुरुष शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं और पीछे रह जाती है अकेली, उपेक्षित स्त्री। गलीज बहू अपने पति गलीज की प्रतीक्षा में खेत–खलिहानों में मेहनत कर जीवन यापन करती है। शहरी कुरीतियों और नैतिक पतन के बीच वह समाज के तानों और परिस्थितियों की मार झेलती है। इसी दौरान एक मनचले युवक गड़बड़ी से उसका संबंध बनता है, जिससे एक पुत्रकृगबरघिचोरकृका जन्म होता है।समाज उस बच्चे को ‘अवैध’ ठहराता है, लेकिन माँ अपने मातृत्व की गरिमा के साथ उसका पालन–पोषण करती है। पंद्रह वर्षों बाद जब गलीज वापस लौटता है और बच्चे पर अपना पारंपरिक अधिकार जताता है, वहीं गड़बड़ी स्वयं को उसका वास्तविक पिता मानता है। विवाद पंचायत तक पहुँचता है, जहाँ न्याय की जगह स्वार्थ, घूस और अमानवीय सोच हावी हो जाती है। पंचों द्वारा गबरघिचोर को तीन हिस्सों में बाँटने जैसा अमानवीय निर्णय मनुष्यता को झकझोर देता है।नाटक का सबसे सशक्त क्षण तब आता है जब माँ अपने बेटे को काटने से इंकार करते हुए अपनी ममता, विवेक और साहस से पुरुषों की नीचता को बेनकाब करती है। अंततः पंच का विवेक जागता है और गबरघिचोर को उसकी माँ के हवाले कर दिया जाता है। ‘गबरघिचोर’ केवल एक पारिवारिक विवाद की कहानी नहीं, बल्कि यह स्त्री–संवेदना, मातृत्व, सामाजिक अन्याय और ग्रामीण व्यवस्था की टूटन पर तीखा व्यंग्य है। मंचन ने दर्शकों को भावुक करने के साथ–साथ सोचने पर मजबूर किया। दर्शकों ने नाटक को खूब सराहा और तालियों के साथ कलाकारों के अभिनय का उत्साहवर्धन कियास

डी एस पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का भव्य शुभारंभ

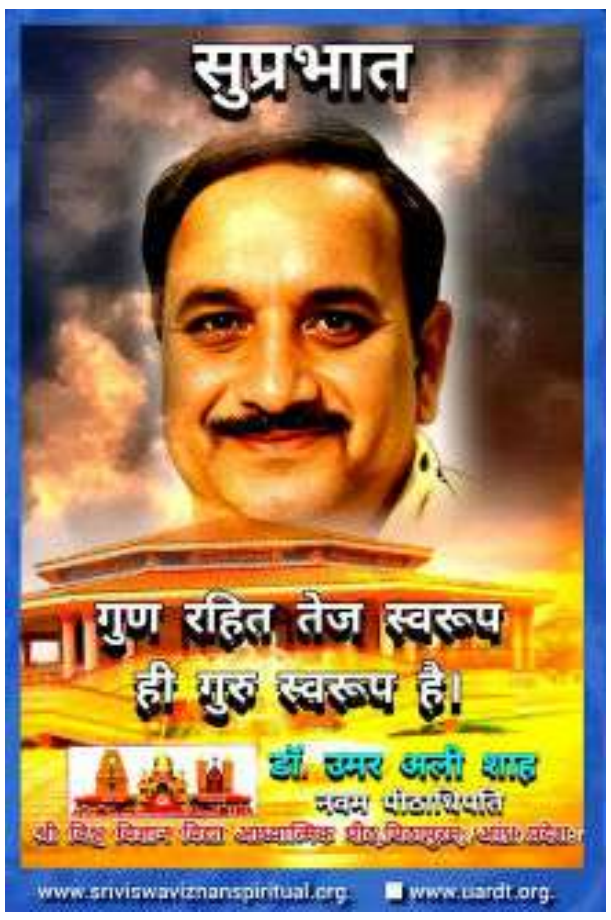

मुजफ्फरनगर। आज यहां डी एस पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। 2 दिन तक चलने वाले इस वार्षिक खेल उत्सव के प्रथम दिन आज नर्सरी से सेकंड क्लास तथा 9वी से 12वीं क्लास के विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। खेल गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया एवं शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी–अपनी इवेंट में पुरस्कार जीते। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण अभिभावकों के लिए आयोजित शकिस्मत का खजाना लकी ड्रा से पानाश रहा जिसमें अतिथियों द्वारा लकी ड्रॉ निकालकर अभिभावकों को उपहार देकर पुरस्कृत किया गया। खेल महोत्सव के पहले दिन आज कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल मैनेजर सुधीर कुमार शर्मा सहित कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री विराज तोमर, श्री संदीप मलिक , श्री अर्जुन निर्वाल ,श्री अनग सिंघल, श्री अतुल बालियान एवं अमर उजाला मुजफ्फरनगर के ब्यूरो चीफ श्री मदन बालियान के साथ स्कूल डायरेक्टर श्रीमती रेनू शर्मा, एजुकेशन डायरेक्टर श्रीमती संतोष जैन तथा प्रधानाचार्य श्री गगन शर्मा ने ज्ञान एवं कला की देवी मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित करके किया। उद्घघाटन बेला पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने उपस्थित अतिथियों एवं अभिभावकों का स्वागत करते हुए शानदार रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। विद्यार्थियों ने जिद है इतिहास बदलना है एवं जय हो जैसे प्रेरणाप्रद गीतों पर प्रस्तुति देते हुए जीत के प्रति अपने जज्बे को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का आरंभ जैस्मिन हाउस और लोटस हाउस की टीमों के बीच खेले गए गर्ल्स खो खो मैच के

द्वारा किया गया। मैच में जैस्मिन हाउस की टीम ने टॉस जीतकर पहले सिटिंग पोजिशन लेते हुए निर्धारित 7 मिनट में अपने प्रतिद्वंदी लोटस हाउस की टीम के 8 खिलाड़ियों को आउट किया। अपनी पारी में लोटस हाउस की टीम ने भी शानदार खेल दिखाया मगर निर्धारित समय में जैस्मिन हाउस के केवल पांच खिलाड़ियों को ही आउट कर सकी। इस तरह बहुत ही रोमांचक रहे इस उद्घाटन मैच को जैस्मिन हाउस की टीम ने 8–5 से जीत कर उद्घाटन मैच की ट्रॉफी अपने नाम की। इसके उपरांत विद्यार्थियों के अभिभावकों के लिए विभिन्न मनोरंजक एवं रोचक खेल गतिविधियां आयोजित की गई।। इन गतिविधियों में अभिभावकों ने उत्साह पूर्वक भाग लेते हुए एवं पूरा आनंद उठाते हुए शानदार प्रदर्शन करके बच्चों के साथ–साथ पुरस्कार जीते। सभी विजेताओं को अतिथियों द्वारा उपहार देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद बॉयज खो–खो में लोटस और जैस्मिन हाउस की टीमों के बीच ही मुकाबला खेला गया जिसमें लोटस हाउस की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जैस्मिन हाउस के 17 खिलाड़ियों को आउट किया। मेजर स्कॉरर के रूप में खेले गए इस मैच में जैस्मिन हाउस की टीम ने भी शानदार पलटवार किया मगर लोटस हाउस के कुल 15 खिलाड़ी ही आउट कर सकी एवं लोटस हाउस की टीम ने 17–15 से बॉयज को खो खो का मैच जीत कर ट्रॉफी अपने नाम की। खो खो के ही एक और मैच में लिली एवं रोज हाउस की गर्ल्स टीमों के बीच मैच खेला गया जिसमें रोज हाउस की टीम ने लिली हाउस की टीम को 5–4 से हराया। इसके अतिरिक्त मैदान पर आज अभिभावकों के लिए विभिन्न प्रकार की रोमांचक खेल गतिविधियां भी आयोजित की गई। अभिभावकों के लिए आज पास दि बाल, कोन रेस, पास दि बाल फ्रोम , कोन रेस, रिंग रेस जैसी मनोरंजन खेल गतिविधि आयोजित की गई जिसमें बच्चों के माता–पिता ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने बच्चों के साथ पुरस्कार जीते। कक्षा नर्सरी से लेकर के 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित हुई इन गतिविधियों में श्रीमती मोनिका , श्रीमती मनीषा, श्रीमती बबीता, श्री योगेश, श्री अंकुर एवं श्री प्रशांत ने अपने–अपने इवेंट्स में शानदार प्रदर्शन करते हुए पुरस्कार जीते। सभी अतिथियों ने विजेताओं को बधाई देते हुए उपहार देकर पुरस्कृत किया। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय गान तथा भारत माता की जय के उद्घोषों के साथ, कल दूसरे दिन के खेलों की घोषणा की गई।

पैंडोरा से गंगा तक – साल की सबसे बड़ी इवेंट फ़िल्म अवतारः फ़ायर एंड ऐश का देवनागरी लोगो वाराणसी में भव्य रूप से हुआ लॉन्च’

शहर समता,वाराणसी। सिनेमा और संस्कृति के अनोखे संगम का जश्न मनाते हुए, साल की सबसे बहुप्रतीक्षित वैश्विक इवेंट फ़िल्म

अवताररू फ़ायर एंड ऐश ने वाराणसी में गंगा के तट पर अपना विशेष देवनागरी लोगो लॉन्च किया – भारत के आध्यात्मिक केंद्र को दुनिया की सबसे प्रभावशाली सिनेमाई यूनिवर्स में से एक से जोड़ते हुए। शाम की शुरुआत वाराणसी को समर्पित एक मनमोहक प्रस्तुति से हुई। सीज़र द्वारा कोरियोग्राफ की गई यह प्रस्तुति आग और राख के मूलभूत तत्वों से प्रेरित थी, जिसने उस ऐतिहासिक पल तक माहौल को पहुंचायाकृभारत में अवतार फ्रेंचाइज़ी के लिए बनाए गए पहले देवनागरी लोगो के भव्य अनावरण तक। थीम के अनुरूप, खासतौर पर तैयार किया गया ऊर्जावान संगीत जस्टिन–उदय डुओ ने कंपोज़ किया। यह नई पहचान भारत की सांस्कृतिक विरासत को सलाम करती है और फ़िल्म के मुख्य विषयकृअग्नि, प्रकाश और रूपांतरणकृको खूबसूरती से प्रतिबिंबित करती है। इन तत्वों का प्रतीक मानी जाने वाली पवित्र नगरी में इसका लॉन्च इसे और भी अर्थपूर्ण बनाता है। 20th CenturyStudios की अवताररू फ़ायर एंड ऐश भारत में 19 दिसंबर को अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़कृ इन 6 भाषाओं में रिलीज़ होगी। एडवांस बुकिंग अब खुल चुकी है।

लक्ष्य 2027 हेतु उत्तरप्रदेश में घर घर चिराग जलाना होगा. पवन वर्मा प्रदेश अध्यक्ष लोकजनशक्तिपार्टी रामविलास

मुजफ्फरनगरसलोकजनशक्ति पार्टी रामविलास प0 उत्तरप्रदेश की समीक्षा बैठक हरपाल पैलेस गढ़ रोड जनपद हॉपुड में सम्पन्न हुई । समीक्षा बैठक की अध्यक्षता हॉपुड जिलाध्यक्ष अनवर कुरेशी ने की कार्यक्रम का संचालन प्रदेश प्रधान महासचिव राजीव गोयल ने किया प्रदेश अध्यक्ष पवन वर्मा के कार्यक्रम स्थल पर पहुचने पर जिलाध्यक्ष हॉपुड ने फूल मालाओं से शानदार स्वागत किया । समीक्षा बैठक में सर्वप्रथम बाबा साहब अम्बेडकर जी व पार्टी के संस्थापक दलितों के मसीहा रामविलास पासवान जी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। समीक्षा बैठक में प0 उत्तरप्रदेश के सभी जनपदों से प्रदेश पदाधिकारी व जिलाध्यक्षो महानगर अध्यक्ष कार्यकर्ताओ ने प्रतिभाग किया ।प्रदेश अध्यक्ष पवन वर्मा ने कहा कि आज समीक्षा बैठक में जिन जिन जनपदों का संग़ठन सक्रिय है और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान जी की नीतियों सिधान्तो में आस्था रखते हुए

पार्टी को आगे बढ़ने का कार्य कर रहे है उंन्हे ही पार्टी की जिम्मेदारी दी जाएगी जो भी पदाधिकारी निष्क्रिय है उंन्हे पदमुक्त किया जाएगा साथ ही पार्टी संग़ठन को जो भी नुकसान पहुचने का कार्य कर रहे है उंन्हे पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा। पार्टी ने मा0 राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में राष्ट्रीय नेताओ के साथ बिहार में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की जिस प्रकार बिहार में हमारे 19 विधायक प्रचंड वोट से जीत कर आये है उसी प्रकार उत्तरप्रदेश में भी पार्टी का परचम लहराने का काम पार्टी के कार्यकर्ताओं को करना होगा। पवन वर्मा ने प्रदेश व जनपद स्तर पर कॉर्डिनेशन बनाने की बात कही। प्रधान महासचिव राजीव गोयल ने कहा कि कार्यकर्ता किसी भी पार्टी की रीढ़ होते है यदि वो ही निष्क्रिय होंगे तो पार्टी आगे नही बढ़ सकती पार्टी का जनाधार बढ़ाना होगा जिसके लिये हमें अपने नेता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान जी की नीतियों को उनके किये कार्यो को जन जन तक पहुचने का काम करना होगा ।आपस की गुटबंदी छोड़ पार्टी को मजबूत करना होगा तभी हम 2027 लक्ष्य को पा सकते है उन्होंने कहा कि पार्टी के जिलाध्यक्ष व नगर अध्यक्ष ही पार्टी को चलाते है उन्होंने पार्टी पदाधिकारियों से आम जनता से जुड़ने का आह्वान किया। पार्टी के महासचिव मोतीलाल सिंघानिया ने कहा कि पार्टी में अनुशाहनहिंता किसी भी कीमत पर बर्दास्त नही होगी जो पदाधिकारी काम करेगा वही पद पर रहेगा उन्होंने उत्तम कार्य करने वाले जिलाध्यक्षो नगर अध्यक्ष की सराहना भी की ।प्रदेश महासचिव एस के झा ने कहा कि पार्टी में अनुशाशन का बहूत महत्व है सभी को आपस में मिलजुल कर पार्टी को आगे बढ़ाना है। प्रदेश महासचिव प्रदीप अरोरा ने कहा कि पार्टी के सच्चे सिपाही वही है जो अपने नेताओं की नीतियों को जनजन तक पहुचाने का काम करते है पार्टी प0 उत्तरप्रदेश में पवन वर्मा के नेतृत्व में मजबूत हो रही है जिसके लिये सभी पधाधिकारी प्रसंशा के पात्र है। प्रदेश उपाध्यक्ष खुर्शीद आलम ने कहा कि अब सभी कार्यकर्ताओं को कमर कस कर मेहनत करणो होगी लक्षय 2027 को भेदना ही हम सब का लक्ष्य है हर घर मे चिराग जलाना है चिराग पासवान हर भारतीय के नेता है उन्होंने बिहार में यह साबित भी कर दिया ।समीक्षा बैठक के अंत मे हॉपुड जिलाध्यक्ष अनवर कुरेशी ने सभी का आभार व्यक्त किया समीक्षा बैठक में मुख्य रूप से सहारनपुर जिलाध्यक्ष सुखपाल सिंहए मुज़फ्फरनगर जिलाध्यक्ष चंद्रप्रकाशए शामली जिलाध्यक्ष गुलफामए बागपत जिलाध्यक्ष प्रतिमा सिंहए मेरठ जिलाध्यक्ष सुमित कुमारए शाहजहांपुर जिलाध्यक्ष अमित पासवानएगौतम बुद्ध नगर जिलाध्यक्ष तनिष्क चंदेलाए मुरादाबाद अनुज कुमार गाजियाबाद महानगर अध्यक्ष अमित मदानए बुलंदशहर अध्यक्ष अब्दुल सलाम सैफी आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

फॉर्च्यूनर ने कोर्ट मुंशी को टक्कर मारी-50 फीट दूर गिरा,मौके पर मौत

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में सड़क किनारे चाय पी रहे कोर्ट मुंशी को तेज रफ्तार फॉर्च्यूनर ने टक्कर मार दी, जिससे वह उछलकर 50 फीट दूर जा गिरे। इसके बाद ड्राइवर ने भागने के चक्कर में उनके पेट पर गाड़ी चढ़ा कर रौंद दिया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। लोगों ने दौड़ाकर गाड़ी को रुकवाया, लेकिन ड्राइवर मौका पाकर फरार हो गया। पुलिस ने फॉर्च्यूनर को कब्जे में लिया है, जिसपर बीजेपी का झंडा और विधानसभा का पास लगा है। घटना गोमती नगर के विभूति खंड इलाके में शनिवार सुबह हुई। मृतक की पहचान गंगापुरवा गांव के (सीतापुर) के रहने वाले सुनील कुमार (32) के रूप में हुई। बताया गया कि सुनील हाईकोर्ट में वकील के मुंशी थे। लखनऊ में सुषमा हॉस्पिटल के पास किराए का मकान लेकर रहते थे। सुनील शनिवार सुबह करीब 6 बजे चाय पीने सुषमा हॉस्पिटल के पास गए थे।

सम्पादकीय.....

बचे बचपन

पश्चिमी देश, जिस सोशल मीडिया के गुणगान करते नहीं अघाते थे, अब उन्हें इससे बच्चों में पनपती विकृतियों की हकीकत समझ में आने लगी है। सुगबुगाहट तो ब्रिटेन से लेकर अमेरिका तक प्रतिबंधों को लेकर हो रही है, लेकिन इस दिशा में पहल करने का साहस आस्ट्रेलिया ने सुधारवादियों के दबाव में उठाया है। आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने कहा है कि वे बड़ी तकनीकी कंपनियों के अधिकार इसलिए वापस ले रहे हैं ताकि बच्चों के बच्चे होने के अधिकार और माता–पिता की मानसिक शांति के अधिकार की रक्षा हो सके। उन्होंने लोगों को भरोसा दिलाया है कि यह सुधार जिंदगियां बदल देगा। साथ ही आस्ट्रेलिया के बच्चों को बचपन जीने का मौका देगा। आज दुनिया के तमाम देश मंथन कर रहे हैं यदि आस्ट्रेलिया यह पहल कर सकता है तो वे क्यों नहीं कर सकते। इनमें वे तमाम अभिभावक भी शामिल हैं जो अपने बच्चों की आत्महत्या के लिये सोशल मीडिया को जिम्मेदार मानते हैं। उल्लेखनीय है कि आस्ट्रेलिया में यदि सोशल मीडिया मंच 16 साल से कम उम्र के बच्चों के अकाउंट हटाने में असफल रहते हैं, तो उन्हें करीबन पांच करोड़ आस्ट्रेलियाई डॉलर तक का जुर्माना चुकाने के लिये बाध्य होना पड़ सकता है। आस्ट्रेलियाई सरकार क्रिसमस तक मूल्यांकन करेगी कि ये प्रतिबंध कितने कारगर साबित हुए हैं। निस्संदेह, आस्ट्रेलिया की पहल ने पूरी दुनिया में सोशल मीडिया से बच्चों को दूर रखने की मुहिम को नई ऊर्जा दे दी है। कमोवेश, भारत जैसे देश भी सोशल मीडिया की असामाजिकता का दंश झेल रहे हैं। इसमें बच्चों के साथ ऑनलाइन बुलिंग से लेकर ऑनलाइन ठगी तक के तमाम मामले गाहे–बगाहे सामने आते रहते हैं। विडंबना है कि आज सोशल मीडिया पर प्रसारित वयस्कों की सामग्री से बच्चे जाने–अनजाने में परिचित हो रहे हैं। वे समय से पहले वयस्क हो रहे हैं। जिससे समाज में तमाम तरह की सामाजिक विकृतियां पैदा हो रही हैं। निस्संदेह, इससे आने वाले समय में घातक सामाजिक विद्रूपताएं पैदा हो सकती हैं। दरअसल, बच्चों के लगातार घंटों कथित सोशल मीडिया में सक्रिय रहने से उनमें तमाम शारीरिक व मानसिक विसंगतियां पैदा हो रही हैं। उन्हें संस्कार अब माता–पिता व शिक्षक नहीं, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का दोहन करने वाले निहित स्वार्थी तत्व दे रहे हैं। जो कि भारतीय जीवन–मूल्यों व संस्कारों से मेल नहीं खाते। आज सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर इतनी अश्लील व द्विअर्थी सामग्री का प्रवाह है कि हमारे किशोर आपराधिक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। सोशल मीडिया के घातक प्रभाव के चलते आज बच्चों के नायक बदल गए हैं। उनके आदर्श बदल गए हैं। उनका नजरिया बदल रहा है। सोशल मीडिया के कतिपय मंचों पर अश्लील सामग्री की उपलब्धता ने किशोरों में ब्रह्मचर्य के भारतीय मूल्यों को ताक पर रख दिया है। विडंबना यह है कि घंटों सोशल मीडिया पर बैठे रहने वाले बच्चे शारीरिक सक्रियता से दूर हो रहे हैं। जिससे उनमें मोटापा व अनेक गैर संक्रामक रोग पनप रहे हैं। वे किशोर अवस्था में मधुमेह आदि उन रोगों के शिकार बन रहे हैं जो कभी बड़ी उम्र के लोगों को हुआ करते थे। इस संकट का एक घातक पहलू यह भी है कि मोबाइल पर लगातार सोशल मीडिया के कार्यक्रम स्क्रॉल करने वाले बच्चों की मानसिक एकाग्रता बाधित हो रही है। जाहिर है इसका प्रभाव उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर पड़ेगा। एक समय दुनिया के तमाम देशों में जिन भारतीय प्रतिभाओं का डंका बजता था, शायद भविष्य में ऐसा न हो। घंटों सोशल मीडिया पर बिताने वाले छात्रों से उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे अपनी पढ़ाई के लिये पूरी तरह एकाग्र हो सकेंगे। निरंतर कल्पना लोक में विचरण करने वाले बच्चे जब जीवन की हकीकत से जूझते हैं तो टूटने–बिखरने लगते हैं। गाहे–बगाहे आत्महत्या करने वाले किशोरों के डेटा का यदि गंभीरता से विश्लेषण किया जाए तो निश्चित रूप से हम सोशल मीडिया के घातक प्रभाव की हकीकत से रूबरू हो सकते हैं। आस्ट्रेलियाई पहल से सबक लेकर भारत के नीति–नियंताओं को भी इस दिशा में गंभीरता से पहल करनी चाहिए। इस दिशा में थोड़ी भी देरी की देश को भविष्य में बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

हमारे हितों की अनदेखी कर हमसे दोस्ती मुमकिन नहीं

ब्रह्मा चेलानी

> *क्योंकि जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति और सैन्य क्षमता– जिनमें परमाणु क्षमता भी शामिल है– के लिहाज से भारत एकमात्र ऐसा देश है, जो एशिया पर प्रभुत्व जमाने और अमेरिका के वर्चस्व को बेदखल करने की चीन की कोशिशों को चुनौती दे सकता है।*

अमेरिका की भारत–नीति दिन–ब–दिन अधिक विद्वेषपूर्ण होती जा रही है, लेकिन उसे यह मालूम होना चाहिए कि दीर्घकालिक अमेरिकी रणनीतिक हितों के लिए भारत से अधिक महत्वपूर्ण कोई और शक्ति नहीं है। क्योंकि जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति और सैन्य क्षमता– जिनमें परमाणु क्षमता भी शामिल है– के लिहाज से भारत एकमात्र ऐसा देश है, जो एशिया पर प्रभुत्व जमाने और अमेरिका के वर्चस्व को बेदखल करने की चीन की कोशिशों को चुनौती दे सकता है। जॉर्ज डब्ल्यू. बुश के कार्यकाल से ही वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों ने भारत –प्रशांत क्षेत्र में शक्ति–संतुलन बनाए रखने के लिए भारत के साथ साझेदारी को निर्णायक माना है। यह नीति कभी सिर्फ भाषणबाजी तक ही सीमित नहीं रही थी। पिछले एक दशक में तो अमेरिका–भारत सुरक्षा संबंध तेजी से गहराए थे– विशेषकर सैन्य इंटर–ऑपरेबिलिटी, खुफिया सहयोग और तकनीकी लेनदेन के स्तर पर। वास्तव में, भारत–अमेरिका रिश्तों में बढ़त का एक हिस्सा तो ट्रम्प के पहले कार्यकाल में घटा था। चीन पर दबाव बढ़ाने और पाकिस्तान को दी जाने वाली सुरक्षा सहायता घटाने के साथ ही ट्रम्प ने भारत के साथ सहयोग को बढ़ाया, जो उनकी इंडो–पैसिफिक रणनीति के केंद्र में था।

इसका असर भी स्पष्ट है रू भारत आज किसी भी अन्य देश की तुलना में अमेरिका के साथ अधिक सैन्य अभ्यास करता है और अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन चुका है। लेकिन इसी प्रक्रिया के बीच अमेरिका ने भारत को सतर्क रहने के कई कारण भी दिए। अफगानिस्तान से उसका अव्यवस्थित पलायन– जो बाइडेन के कार्यकाल में हुआ लेकिन जिसकी बुनियाद ट्रम्प द्वारा किए समझौते से पड़ी थी– ने अमेरिकी नेतृत्व की समझदारी और विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए, क्योंकि इसने अफगानिस्तान को फिर से तालिबान के हवाले कर दिया। चिंताएं 2022 में तब और बढ़ीं, जब बाइडेन प्रशासन ने पाकिस्तान को आईएमएफ से बेलआउट दिलाने में मदद की और फिर उसके एफ–16 बेड़े के आधुनिकीकरण के लिए 45 करोड़ डॉलर की भी मंजूरी दे दी। ट्रम्प ने भी पाकिस्तान के प्रति इस झुकाव को और तेज ही किया है, जिसका एक उदाहरण उससे की गई क्रिप्टोकरेंसी डील है। अमेरिका ने अकसर भारत के हितों की अनदेखी की है। इसके बावजूद रूस पर लगाए प्रतिबंधों को लागू कराने के मामले में वह भारत से पूरी निष्ठा की उम्मीद करता रहा। भारत इससे सहमत नहीं हुआ और उसने डिस्काउंटेड दरों पर रूसी तेल की खरीद बढ़ा दी। भारत को सुदूर यूरोप में चल रहे किसी संघर्ष के लिए अपने राष्ट्रीय हितों की बलि देने का कोई कारण नहीं दिखा, खासकर तब, जब रूस पर पश्चिमी दबाव का सबसे बड़ा लाभार्थी चीन था। भारत इस समीकरण को पहले भी देख चुका है। 2019 में जब ट्रम्प ने ईरान पर कड़े प्रतिबंध लगाए तो भारत अपने सबसे सस्ते और भरोसेमंद ऊर्जा स्रोतों में से एक से वंचित हो गया था।

चीन ने इसका पूरा फायदा उठाया। उसने ईरानी कच्चा तेल भारी छूट पर खरीदा और वहां अपनी सुरक्षा मौजूदगी बढ़ाई। रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद भी यही पैटर्न उभरा। पश्चिमी बाजारों से रूस को अलग कर देने के बाद उस पर लगाए प्रतिबंधों ने उसे चीन पर आर्थिक रूप से निर्भर बना दिया, जिससे चीन को रूस से आने वाले ऊर्जा–आपूर्ति मार्गों को मजबूत करने की क्षमता मिल गई। अब चीन जानता है कि ताइवान पर कार्रवाई करने पर भी रूसी ऊर्जा तक उसकी पहुंच नहीं घटेगी। इस बार भारत ने भी रूसी तेल पर उपलब्ध छूट का लाभ उठाया। अमेरिका भारत को अपने लिए जरूरी बताता है, लेकिन उसके हितों की अनदेखी भी करता है। वह चाहता है कि भारत इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में उसकी रणनीति का आधार बने, लेकिन वो ऐसी नीतियां भी अपनाता है, जो भारत की आर्थिक क्षमता, क्षेत्रीय सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता को सीधे नुकसान पहुंचाती हैं।

यही कारण है कि आज भारत अमेरिका के प्रति अविश्वास से भर गया है और उसे रूस से संबंध मजबूत करने को मजबूर होना पड़ रहा है। अमेरिका हमारे साथ अच्छे रिश्ते चाहता है तो उसे हमें बराबरी का दर्जा देना होगा। अमेरिका भारत को अपने लिए जरूरी बताता है, लेकिन उसके हितों की अनदेखी भी करता है। वह चाहता है कि भारत इंडो–पैसिफिक में उसकी रणनीति का आधार बने, लेकिन वो ऐसी नीतियां भी अपनाता है, जो हमें क्षति पहुंचाती हैं।

शब्द सोच–समझ कर इस्तेमाल करना चाहिए

भारत के संसदीय इतिहास में एक और काला अध्याय उस समय जुड़ गया, जब केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने चुनाव सुधारों पर सरकार की तरफ से पक्ष रखते हुए एक अपशब्द के साथ चुनाव आयोग को जोड़ा। हालांकि श्री शाह के बयान से उस शब्द को हटा दिया गया है। मीडिया भी इसकी चर्चा नहीं कर रहा, क्योंकि मामला भाजपा की साख का है। लेकिन इस मामले को न हल्के में लिया जाना चाहिए, न इसे उपेक्षित करना चाहिए। क्योंकि यहां सवाल संसद की मर्यादा का है। भारत की संसद पर आतंकी हमला, सदन के भीतर नोटों की गड्डी लहराना, बसपा के अल्पसंख्यक सांसद दानिश अली को भाजपा के सांसद रमेश बिधूड़ी का अपशब्द कहना और भाजपा के बाकी सांसदों का उस पर हंसना, नए संसद भवन में दो युवकों द्वारा रंगीन धुआं छोड़ना, ऐसे कुछ प्रकरण हैं, जो गौरवशाली संसदीय इतिहास में दुरूस्वप्न की तरह हैं। इन घटनाओं को मिटाया नहीं जा सकता, लेकिन इनसे सबक लेते हुए आईंदा इन्हें घटने से रोका जा सकता है। लेकिन अफसोस है कि सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी इसमें न केवल नाकाम रही, बल्कि इस बार तो संसद के अपमान के लिए खुद गृहमंत्री ही जिम्मेदार हैं।अमित शाह ने गुजरात की राजनीति से आगे बढ़कर दिल्ली तक का सफर काफी जल्दी तय किया। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद अमित शाह का सियासी कद भी बढ़ा। 2014 में भाजपा का अध्यक्ष पद संभालने के बाद वे 2019 में देश के गृहमंत्री बने और अब इस पद पर सबसे लंबे वक्त बनने वाले व्यक्ति बन चुके हैं। मोदी–शाह की जोड़ी ने भाजपा को सबसे ताकतवर पार्टी बना दिया है। मोदी का चेहरा और शाह की रणनीति भाजपा की जीत का असली कारक बताई जाती है। अमित शाह को तो आधुनिक चाणक्य तक कहा जाता है। हम नहीं जानते कि इस तरह की तुलना मीडिया के प्रचार की वजह से हुई या चापलूसी से, लेकिन कम से कम चाणक्य से गलती की उम्मीद तो न चाटुकारों को होगी, न भाजपा के कार्यकर्ताओं को। इस उम्मीद पर बुधवार को पानी फिर गया, जब विपक्ष को घेरने में अमित शाह ने लोकसभा के भीतर अपशब्द का प्रयोग किया।राहुल गांधी, गौरव गोगोई जैसे सांसदों ने इसका प्रतिवाद किया तो संभवतरू श्री शाह को अपनी गलती समझ आई और उन्होंने आसंदी से कहा कि मैंने अगर कुछ गलत कहा हो तो उसे हटा दीजिए। अच्छी बात है कि श्री शाह ने खुद ही आसंदी से अपने शब्दों को हटाने कह दिया। लेकिन इसमें भी एक किस्म का अहंकार नजर आया, अपनी गलती पर शर्मिंदगी कहीं नहीं दिखी। अगर अमित शाह जानते हैं कि उनकी पार्टी में उन्हें चाणक्य माना जाता है, या उन्हें यह अहसास है कि वे सरकार में कितने शक्तिशाली हैं और गृहमंत्री के तौर पर कितनी अहम जिम्मेदारी निभा रहे हैं, तब उनसे ऐसी चूक नहीं होनी चाहिए थी। चुनाव सुधार जैसे महत्वपूर्ण विषय पर बोलते हुए एक–एक शब्द सोच–समझ कर इस्तेमाल करना चाहिए था। लेकिन भाजपा तो संसद को भी चुनावी मंच की तरह ही उपयोग में लाती है।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के लिए रेनकोट पहन कर नहाने जैसी निम्नस्तरीय टिप्पणी कर चुके हैं, राज्यसभा सांसद रेणुका चौधरी की हंसी की तुलना शूर्पणखा की हंसी से कर चुके हैं। सदन में खड़े होकर बेबुनियाद बातें करना या विपक्ष पर मिथ्या आरोप गढ़ना भी भाजपा की आम रणनीति बन चुकी है। भाजपा को लगता होगा कि इस रणनीति में मर्यादा और नैतिकता के लिए जगह बनाई जाए तो फिर उसका असर कम हो जाएगा। संभवतरू इसलिए गंभीर विषयों पर भी हल्केपन के साथ चर्चा की जाती है, जिसमें अपशब्द शामिल हो सकते हैं, इसकी परवाह भी नहीं की जाती। अमित शाह की टिप्पणी के बाद कई सांसद चिंता जतला रहे हैं कि संसद में ये दिन भी देखना पड़ेगा, ऐसी कल्पना नहीं की थी। यह चिंता वाजिब है और यहीं विपक्ष की जिम्मेदारी पहले से अधिक बढ़ जाती है कि अब वो भाजपा को संसद को अपने राजनैतिक हितों का जरिया बनाने से रोके। देश के मीडिया को भी इस बारे में गंभीरता से सोचना होगा। भाजपा के एजेंडे के अनुरूप टीवी चौनलों पर जब से हिंदू–मुस्लिम बहसों को बढ़ावा दिया गया, स्टूडियो का माहौल बिगड़ चुका है। अब केवल चीखने–चिल्लाने कर ये बहसें सीमित नहीं हैं, बल्कि खुलकर अपशब्दों का इस्तेमाल और हाथापाई तक होने लगी है। समाज पर ऐसी बहसें किस तरह का असर करती हैं, पहले इसकी चिंता थी। अब यही चिंता संसद की कार्रवाई पर होने लगी है। इसलिए अमित शाह द्वारा अपशब्द के इस्तेमाल पर गहन–गंभीर विमर्श होने चाहिए कि आखिर ऐसी स्थिति क्यों बनी और इसका निराकरण कैसे हो सकता है।फर्ज कीजिए कि अगर विपक्ष के किसी सांसद की तरफ से ऐसा होता तो भाजपा इस मामले पर कितना बवाल खड़ा करती। राहुल गांधी ने एक बार अपनी बहन प्रियंका गांधी के गाल स्नेह से खींच दिए थे, तो ओम बिड़ला ने फौरन उन्हें टोकते हुए सदन की मर्यादा बनाए रखने की नसीहत दी थी। क्या ऐसी ही नसीहत अमित शाह को भी फौरन नहीं मिलनी चाहिए थी। संसद में पक्ष–विपक्ष के बीच तीखी बहसें हों, एक–दूसरे की कमियों को भरपूर गिनाया जाए, आरोप–प्रत्यारोप लगाए जाएं, लेकिन इन सबके बीच संसद की गरिमा हर हाल में कायम रहे, यह जिम्मेदारी हरेक सांसद की है। हर सांसद यह तथ्य याद रखे कि उसे देश की सबसे बड़ी पंचायत में लाखों लोगों ने अपनी आवाज उठाने की उम्मीदों के साथ भेजा है। संसद की हरेक मिनट की कार्रवाई सुचारु चले इसके लिए जनता अपनी कमाई माननीयों पर खर्च करती है। उनके लिए तमाम तरह की रियायतें देकर खुद कष्ट उठाती है। इसके बाद अगर वहां काम करने की जगह अगर अपशब्द सुनने मिलें तो यह लोक और लोकतंत्र दोनों के साथ धोखा है।

खाने–पीने की चीजों के दामों पर सरकार का अंकुश जरूरी

नीरज कौशल

महंगाई के मुद्दे ने दुनिया में कई चुनावों के नतीजे तय किए हैं। अमेरिका में कोविड के बाद महंगाई को काबू में न रख पाने की कीमत जो बाइडेन और डेमोक्रेट्स को व्हाइट हाउस खोकर चुकानी पड़ी थी। डोनाल्ड ट्रम्प ने कीमतें घटाने का वादा किया था, लेकिन उलटे उन्होंने टैरिफ बढ़ा दिए, जिससे महंगाई और बढ़ी। उनका कोर वोटर इससे नाखुश है। ऐसे में कई विश्लेषकों का मानना है कि मिड–टर्म चुनावों में रिपब्लिकंस का प्रदर्शन कमजोर रह सकता है क्योंकि ट्रम्प प्रशासन महंगाई घटाने में नाकाम रहा है। सच पूछो तो राजनेता महंगाई से डरते हैं। अमेरिका में अंडे की कीमतें– और भारत में प्याज के दाम– उनकी धड़कनें बढ़ा देते हैं। बहुतों का मानना है कि 1998 में प्याज की ऊंची कीमतों ने ही अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार गिराने में अहम भूमिका निभाई थी। भारत में सब्जियों की कीमतों में उतार–चढ़ाव तो खासा बदनाम है। यहां कुछ ही महीनों– और कभी–कभी तो कुछ ही हफ्तों में– टमाटर या प्याज की कीमतें दस गुना तक बढ़ या घट जाती हैं। उदाहरण के तौर पर, दिल्ली में पिछले नवंबर में प्याज 100 रुपए किलो बिक रहा था और हाल में वह 13 रुपए किलो पर बिका। टमाटर पिछले अक्टूबर में 65 रुपए किलो था, अब 35 रुपए किलो है। हम अकसर बढ़ी हुई कीमतों पर ही ध्यान देते हैं, जबकि हालिया रुझान दिखाता है कि कीमतों का पेंडुलम दोनों दिशाओं में बराबर झूलता है। किसी भी व्यवसाय में आउटपुट–कीमतों में ऐसी अस्थिरता कारोबारी को हैरान–परेशान कर सकती है। कीमतों में उतार–चढ़ाव कम करने के लिए सरकार क्या कर सकती है? दो सरल उपाय हैं रू वैश्विक स्रोतों से खरीद और फूड प्रोसेसिंग। पाठकों को यह

जानकर आश्चर्य होगा कि औद्योगीकृत देशों में फल–सब्जियों की कीमतें साल भर काफी स्थिर रहती हैं। इसका कारण यह है कि वे घरेलू फसल पर निर्भर नहीं रहते। वे वैश्विक सप्लाई चेन से जुड़े रहते हैं और जिस भी गोलार्ध में मौसम अनुकूल हो, वहां से आयात करते हैं। दक्षिणी और उत्तरी गोलार्ध की काउंटर–सीजनैलिटी (एक के ऑफ–सीजन के समय दूसरे का ऑन–सीजन) के कारण उन्हें साल भर आपूर्ति मिलती है। यही कारण है कि अमेरिका में लोगों को सालभर ताजे टमाटर मिलते हैं। ऑफ–सीजन में वे चिली या मैक्सिको से टमाटरों का आयात कर लेते हैं। वास्तव में शायद ही ऐसा कोई मौसमी उत्पाद है, जो अमेरिकी ग्रॉसरी स्टोर्स में ऑफ–सीजन में भी उपलब्ध न होता हो। जब कैलिफोर्निया या फ्लोरिडा की आपूर्ति कमजोर पड़ती है तो मैक्सिको, कनाडा, चिली, ग्वाटेमाला या कोस्टा रीका उसकी भरपाई कर देते हैं। दक्षिणी गोलार्ध की सस्ती मजदूरी, कम परिवहन लागत और उनका विशाल कोल्ड–स्टोरेज नेटवर्क अमेरिकी सुपरमार्केट की शेल्फों पर साल भर स्थिर कीमतें बनाए रखते हैं। लेकिन भारत में उपभोक्ताओं की रक्षा के नाम पर आयात–नियंत्रण और किसानों की रक्षा के नाम पर निर्यात–नियंत्रण ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि बड़े पैमाने पर फलों और सब्जियों के व्यापार तथा भंडारण के लिए आवश्यक वैल्यू चेन विकसित ही नहीं हो पाईं। नतीजा यह है कि खाने–पीने की चीजों की कीमतें लगातार ऊपर–नीचे होती रहती हैं। फूड प्रोसेसिंग की बात करें। अधिकांश पश्चिमी देशों में प्याज और टमाटर का बड़ा हिस्सा प्रोसेस कर लिया जाता है– सूखे प्याज–टमाटर, कैन में स्टोर किए हुए स्लाइस या फिर प्याज–टमाटर की प्यूरी के रूप में।

राशि खन्ना

120 बहादुर की शगुन के बेबाक बोल– फिल्म इंडस्ट्री सिर्फ कनेक्शन से काम नहीं मिलता

जितनी खूबसूरत, उतनी ही दमदार। राशि खन्ना उन गिनी चुनी एक्ट्रेसेस में से हैं, जिन्होंने बॉलीवुड से लेकर साउथ सिनेमा तक खूब नाम कमाया है। हालांकि, यह भी दिलचस्प है कि वह कभी ष्प्। अफसर बनना चाहती थीं। इन दिनों श120 बहादुरश में नजर आ रहीं राशि ने नवभारत टाइम्स से अपने अब तक के सफर और इंडस्ट्री पर खुलकर बात की है। श120 बहादुरश की शगुन के बेबाक बोल– फिल्म इंडस्ट्री सिर्फ कनेक्शन से काम नहीं मिलता ष्प्। बनने का ख्वाब देखकर बड़ी हुईं राशि खन्ना को किस्मत फिल्म सेट पर ले आई। दिल्ली में 30 नवंबर 1990 को पैदा हुईं राशि ने 2013 में शमद्रास कैफेश से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इसके अगले ही साल 2014 में उन्होंने साउथ सिनेमा में दस्तक दी। देखते ही देखते वह तेलुगू, मलयालम और तमिल फिल्मों का जाना–माना चेहरा बन गईं। जबकि बॉलीवुड में भी वह तेजी से कदम जमा रही हैं। शाहिद कपूर संग शफर्जीश वेब सीरीज, सिद्धार्थ मल्होत्रा संग श्योद्धाश और अजय देवगन की सीरीज शरूद्रश के बाद राशि खन्ना इन दिनों फरहान अख्तर की फिल्म श120 बहादुरश से चर्चा में हैं। नवभारत टाइम्स से खास बातचीत में उन्होंने अपने क्राफ्ट और इंडस्ट्री में काम को लेकर बेबाक राय साझा की। उन्होंने बॉलीवुड के दिग्गजों से लेकर साउथ में पवन कल्याण और धनुष जैसे सितारों के साथ काम करने के अनुभव पर बात की। साथ ही साफ शब्दों में यह भी कहा कि फिल्म इंडस्ट्री में सिर्फ कनेक्शन के बूते काम नहीं मिलता है। पढ़िए, राशि खन्ना से ये खास बातचीत– आप बचपन से आईएएस बनना चाहती थीं, तो कॉलेज की ये टॉपर लड़की फिल्म सेट पर कैसे पहुंच गई? जी, मैं आईएएस ही बनना चाहती थी, क्योंकि लोग बोलते हैं कि पॉलिटिक्स में नहीं घुसना चाहिए पर मुझे लगता है कि घुसो। हमें जरूरत है कि युवा इन जगहों पर हों ताकि एक पावरफुल पोजीशन में होने के नाते हम लोगों की कुछ मदद कर पाएं। एक्टर तो मेरी एक दोस्त को बनना था, पर किस्मत ने मुझे एक्टर बना दिया। मुझे सामने से ऐड मिलने लगीं। पहली फिल्म शमद्रास कैफेश के लिए भी सामने से कॉल आई। मेरा तो ऑडिशन देने का भी मन नहीं था। मुझे लगता था कि मुझे क्यों ही लेंगे। मेरा कोई बैकग्राउंड नहीं है, मुझे एक्टिंग आती नहीं है, मगर फिल्म मिल गई। शमद्रास कैफेश के सेट पर मुझे अहसास हुआ कि ये काम मैं बहुत नैचुरली कर रही हूं तो शायद यही मेरी दिशा है। तब मैंने सरेंडर कर दिया और अब एक्टर बनकर भी मुझे लगता है कि मैं उस पोजीशन पर हूं जहां मैं लोगों की मदद कर सकती हूं। इसी वजह से मेरी ये सोच रही है कि मैं ऐसी फिल्में करूं जिससे लोग कुछ साथ लेकर जाएं। जैसे, श120 बहादुरश देखकर लोगों को अपना इतिहास पता चलेगा और अपने जवानों पर गर्व महसूस होगा। श120 बहादुरश के सेट पर राशि खन्ना और फरहान अख्तर श120 बहादुरश में आप प्यारी बहुत लगी हैं, मगर आपका स्क्रीन स्पेस कम है। आपके लिए स्क्रीन स्पेस कितना मायने रखता है? हमारे डायरेक्टर रेजी सर (रजनीश घई) ने जब मुझे अप्रोच किया था, तभी बता दिया था कि इसका स्क्रीन स्पेस इतना लंबा नहीं है, मगर इंपैक्ट बहुत है, तो मैंने कहा– मुझे स्क्रीन स्पेस से इतना फर्क नहीं पड़ता, इंपैक्ट होना चाहिए। मेरे लिए स्क्रीन स्पेस वाकई मायने नहीं रखता। रोल अच्छा लिखा होना चाहिए और याद रहना चाहिए। किरदार लंबा ही हो, पर कुछ प्रभाव न छोड़े तो उसका होना या न होना बराबर है। इसलिए, मैंने यह फिल्म की, क्योंकि मैंने यह कहानी नहीं सुनी थी तो मुझे लगा कि ऐसी कहानियां सुनाना बहुत जरूरी है, जिससे लोगों को पता चले कि हमारी आजादी के लिए हमारे जवानों ने कितनी कुर्बानी दी है। ये कहानियां ही मुझे याद दिलाती हैं कि मैं एक्टर क्यों बनी। श120 बहादुरश में शगुन कंवर सिंह के किरदार में राशि खन्ना इस फिल्म में आप राजस्थानी बनी हैं। अगली फिल्म शतलाखों में एकश में बंगाली हैं, वहीं एक अपकमिंग शो में पंजाबी रोल में हैं। तेलुगू–तमिल में महारत है ही। ये भाषाएं सीखना कितना मुश्किल या आसान होता है? आसान बिल्कुल नहीं होता। बहुत मेहनत लगती है, क्योंकि झूठा एक्सेंट ऑडियंस तुरंत पकड़ लेती है। इसलिए इन सबके लिए बहुत वर्कशॉप करनी पड़ी। जैसे, इस फिल्म में मेरे राजस्थानी डिक्शन कोच थे। इसी तरह, जिस शो में मैं बंगाली बनी हूं, उसके डायरेक्टर बंगाली हैं, तो उन्होंने मदद की। जबकि, पंजाबी मेरे लिए सबसे मुश्किल थी, क्योंकि उसमें बहुत लाइनें बोलनी थीं, तो उसके लिए बहुत वर्कशॉप की। इसके अलावा, मेरे पापा ने बहुत मदद की, क्योंकि उनकी पंजाबी बहुत अच्छी है। आपने पवन कल्याण, धनुष, अजय देवगन, शाहिद कपूर, फरहान अख्तर जैसे कई बड़े एक्टर्स के साथ काम किया है। किसी के साथ शुरू में नर्वसनेस थी? बॉन्डिंग किसके साथ सबसे अच्छी बनी? सच कहूं तो नर्वसनेस किसी के साथ नहीं थी, क्योंकि मैं कभी भी फिल्मी बच्ची नहीं थी, तो मैं स्टार स्ट्रक कभी नहीं रही। मुझे ये भी लगता है कि अगर मैं उनके स्टारडम से प्रभावित हो जाऊंगी तो मेरे काम पर असर पड़ेगा। थोड़ी नर्वस मैं पवन कल्याण सर के साथ थी, क्योंकि उनका ऑरा ही ऐसा है। बाकी, मैं जब कॉलेज में थी तो मेरी बहुत सारी दोस्तों को शाहिद कपूर पर क्रश था, तो शफर्जीश के टाइम मैंने उनको बताया कि मेरी कई दोस्तों को आप पर क्रश था कि जब आपकी शादी हुई तो उनका दिल टूट गया। रही बात बॉन्डिंग की, तो मैं सेट पर दोस्त बनाने भी नहीं जाती ह।

दिलीप कुमार की 103वीं जयंती पर सायरा बानो का भावुक पोस्ट, कहा–हर साल जब यह दिन आता है, तो मेरे दिल में..

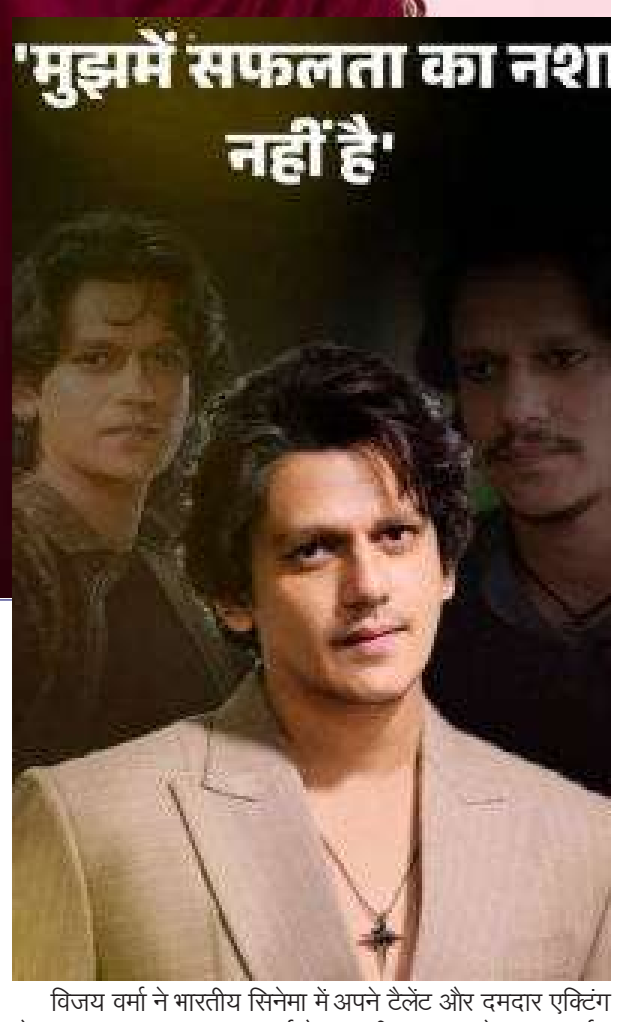

बॉलीवुड के लीजेंड्री एक्टर दिलीप कुमार का 7 जुलाई, 2021 को निधन हो गय था। उनके जाने से सिनेमा जगत को तो बड़ी क्षति हुई ही, वहीं उनके चाहने वालों ने भी अनमोल रत्न खो दिया। अगर आज एक्टर जिंदा होते तो अपना 103वां बर्थडे मनाते। 11 दिसंबर को आज दिवंगत एक्टर की बर्थ जयंती मनाई जा रही है। इस मौके पर एक बार फिर उनके चाहने वाले नम आंखों से उन्हें याद करते नजर आ रहे हैं। वहीं, सायरा बानो ने भी अपने दिवंगत पति दिलीप साहब को याद करते हुए एक लंबा सा पोस्ट शेयर किया है। सायरा बानो ने अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा, 'हर साल जब यह दिन आता है, तो मेरे दिल में एक अजीब हलचल उठती है। उन सभी पलों की याद जब मैंने आपको न केवल दुनिया के लिए एक कलाकार के रूप में, बल्कि एक ऐसे बेहतरीन इंसान के रूप में देखा, जिन्हें मैं जानती हूं। लोग अक्सर आपको एक संस्था, एक असाधारण और बेजोड़ प्रतिभा कहते हैं और वे सही भी हैं। लेकिन मैंने आपके कुछ अनसुने करिश्मे भी देखे हैं। जिस तरह आप हर भूमिका के लिए उस समय, उस खामोशी में सांस लेकर तैयारी करते थे। जिस तरह आप हर किरदार में इस कदर घुल–मिल जाते थे कि यहां तक कि मैं, जो आपको सबसे अच्छी तरह जानती थी, मैं भी उस अभिनय के पीछे छिपे इंसान को खोजने लगती थी। आपका समर्पण हमेशा आपकी कला और आपके प्रशंसकों के लिए तोहफा है।'अपनी इस पोस्ट में सायरा बानो ने दिलीप कुमार के साथ के कुछ पुराने वीडियोज भी शेयर किए हैं। इसमें से एक वीडियोमें सायरा बानो दिलीप कुमार के प्रति अपने प्यार का इजहार कर रही हैं। वो दिलीप साहब को सबसे खूबसूरत बताते हुए कहती हैं कि मेरी मोहब्बत हम दोनों के लिए काफी है। भले इन्हें मुझसे उतनी ही मोहब्बत हो न हो। इसके अलावा एक अन्य वीडियो में दिलीप साहब और सायरा बानो अपने बारे में बात करते नजर आ रहे हैं। बता दें, दिलीप कुमार और सायरा बानो ने 11 अक्टूबर 1966 को शादी रचाई थी। उस वक्त सायरा बानो सिर्फ 22 साल की थीं, जबकि दिलीप कुमार की उम्र 44 साल थी। एक्ट्रेस पूरे 20 साल एक्टर से छोटी थीं।

भय' ट्रेलर वायरल–गौरव तिवारी की कहानी ने दर्शकों को किया दीवाना

अलमाइटी मोशन पिक्चर्स की आगामी पैरानॉर्मल थ्रिलर 'भय– ए गौरव तिवारी मिस्ट्री' रिलीज से पहले ही जबरदस्त चर्चा बटोर रही है। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के कई बड़े फिल्ममेकर और अभिनेता जैसे राम गोपाल वर्मा, आनंद एल राय, वरुण शर्मा, जरीन खान, हिमांशु मेहरा, हंसल मेहता, अशोक पंडित और कई अन्य ने सोशल मीडिया पर ट्रेलर को उत्साहपूर्ण तरीके से साझा किया है। सीरीज में करण टक्कर और कल्कि मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे, जिनके साथ सलोनी बत्रा, डैनिश सूद, निमेश नायर, घनश्याम गर्ग और अन्य प्रतिभाशाली कलाकार कहानी में गहराई और प्रामाणिकता जोड़ते हैं। भारत के पहले पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर गौरव तिवारी के जीवन पर आधारित यह शो उनके क्रांतिकारी केसों, रहस्यमय अनुभवों और मात्र 31 वर्ष की आयु में हुई उनकी संदिग्ध मृत्यु के इर्द–गिर्द बुना गया है। निर्देशक रॉबी ग्रेवाल ने प्रोजेक्ट के बारे में अपनी भावनाएँ साझा करते हुए कहारू "यह एक असाधारण यात्रा थी। मैं गौरव से एक बार मिला था और हम साथ में कुछ करने की योजना बना रहे थे। उनकी अचानक मौत ने एक खालीपन छोड़ दिया। जब प्रभलीन ने मुझे यह कहानी बताई, तो मैं कुछ क्षणों के लिए ठहर गया शायद किस्मत चाहती थी कि मैं ही उनकी कहानी दुनिया के सामने लाऊं। अलमाइटी मोशन पिक्चर की सह–संस्थापक और निर्माता प्रभलीन संधू ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहारू "इस शो को हर स्तर पर तैयार करना बेहद चुनौतीपूर्ण था। लेकिन निर्देशक रॉबी ग्रेवाल और अमेजन एमएक्स प्लेयर की बेहतरीन टीम कृ अमोघ दूदस, अरुणा दर्यानंजी, आनंद जैन की बदौलत यह सीरीज ईमानदार नीयत और साहसिक विजन के साथ बन पाई। ट्रेलर ने 24 घंटे के भीतर ही 1 करोड़ व्यूज पार कर लिए, जो दर्शकों के बीच जोरदार उत्सुकता और बेहतरीन ऑर्गेनिक रिस्पॉन्स का संकेत देता है। 'भय ए गौरव तिवारी मिस्ट्री' का प्रीमियर 12 दिसंबर (शुक्रवार) को केवल अमेजन एमएक्स प्लेयर पर होगा।

विजय वर्मा ने भारतीय सिनेमा में अपने टैलेंट और दमदार एक्टिंग के दम पर मजबूत पहचान बनाई है। उनकी सफलता मेहनत, समर्पण और अलग–अलग प्रकार के किरदार निभाने की क्षमता का नतीजा है। उन्होंने अपने करियर में कई चुनौतीपूर्ण और विविध भूमिकाएं निभाईं, जिनमें उनकी गहराई और भावपूर्ण अभिव्यक्ति साफ झलकती है। विजय न केवल फिल्मी सेट पर बल्कि थिएटर और वेब सीरीज में भी अपनी कला का लोहा मनवा चुके हैं। उनकी संवेदनशील और स्वाभाविक एक्टिंग दर्शकों के बीच गहरा प्रभाव छोड़ती है, जिससे वे तेजी से इंडस्ट्री के प्रमुख कलाकारों में शुमार हो गए हैं। विजय वर्मा की रचनात्मकता और लगातार बढ़ती लोकप्रियता उन्हें भारतीय सिनेमा की नई पीढ़ी के सबसे भरोसेमंद और पसंदीदा कलाकारों में एक बनाती है। उनके संघर्ष, मेहनत और कला के प्रति समर्पण ने उन्हें सफलता के शिखर पर पहुंचाया है। जबकि एक्टिंग की वजह से उनके पापा ने उन्हें घर से निकाल दिया था। स्ट्रगल ऐसा था कि कभी अकाउंट में सिर्फ 18 रुपए थे, लेकिन शगली बॉयश्, 'मिर्जापुर के बाद विजय वर्मा की किस्मत चमक गई। आज की सक्सेस स्टोरी में जानिए विजय वर्मा के करियर और निजी जीवन से जुड़ी कुछ खास बातें– नेशनल अवॉर्ड विनिंग फिल्म से डेब्यू विजय वर्मा की एक्टिंग की शुरुआत थिएटर से हुई। 10वीं कक्षा में एक्टिंग में इंटरेस्ट जगा और कॉलेज पूरा करने के बाद वे थिएटर में सक्रिय हो गए। उन्होंने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया से अभिनय में औपचारिक शिक्षा लेने के बाद कई साल थिएटर में बिताए और फिर राज एंड डीके की शॉर्ट फिल्म शशोरश से फिल्मी करियर की शुरुआत की।

एतिहाद एयरवेज में खाना खाने के बाद हो गई बेहोश नीलम कोठारी, नाराजगी जाहिर कर बोलीं–ऐसी लापरवाही बर्दाश्त से बाहर है

90 के दशक की मशहूर एक्ट्रेस नीलम कोठारी भले ही अब फिल्मों में नजर नहीं आतीं, लेकिन वह अक्सर किसी न किसी वजह को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। हाल ही में उन्होंने सोशल मीडिया पर अपना टोरेंटो से मुंबई की फ्लाइट का एक दुखद अनुभव शेयर किया है और बताया कि वहां खाना खाने के थोड़े समय बाद वह बेहोश हो गई थीं लेकिन वहां के स्टाफ ने इस बात को नजरअंदाज किया। नीलम कोठारी ने एक्स हैंडल पर एयरलाइन्स से शिकायत करते हुए अपनी आपबीती सुनाई और लिखा– एतिहाद एयरलाइन्स, टोरंटो से मुंबई की मेरी लेटेस्ट फ्लाइट में मेरे साथ जिस तरह का बर्ताव हुआ, उससे मैं निराश हूं। मेरी फ्लाइट न केवल 9 घंटे लेट हुई, बल्कि खाने के बाद मैं फ्लाइट में ही बुरी तरह बीमार पड़ गई और बेहोश हो गई। उन्होंने आगे बताया–एक पैसेंजर ने मुझे मेरी सीट तक पहुंचाने में मदद की। लेकिन आपके स्टाफ की तरफ से न तो मुझे किसी प्रकार की मदद मिली और न ही मेरा हालचाल पूछा गया। मैंने आपके कस्टमर केयर से भी कॉन्टैक्ट करने की कोशिश की लेकिन वहां से भी कोई जवाब नहीं मिला। इस तरह की लापरवाही बर्दाश्त से बाहर है। प्लीज इस मामले को जल्द ही निपटारा करें। एक्ट्रेस के पोस्ट के बाद एतिहाद एयरवेज ने रिएक्ट करते हुए लिखा, हेलो नीलम। ये सुनकर दुख हुआ। प्लीज डायरेक्ट मैसेज में हमसे बात करें। हम इस मामले की जांच करेंगे और आपकी मदद करेंगे। धन्यवाद। काम की बात करें तो नीलम कोठारी ने बॉलीवुड में 1980 और 1990 के दशक में 'हत्या', 'खुदगर्ज', 'लव 86', 'दो कैदी' और 'अफसाना प्यार का' जैसी कई फिल्मों में काम किया है। उन्होंने अपने करियर में करीब 45 फिल्मों में ही काम किया है। लंबे समय से ब्रेक के बाद एक्ट्रेस ने इन दिनों ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपना नाम चमका रही हैं।

फिल्म इंडस्ट्री में पैसे देकर अच्छे रिव्यूज खरीदने का कल्चर इन दिनों ट्रेंड देखा जा सकता है. कई मौकों पर ऑडियंस ने भी नोटिस किया है कि एक्टर्स और डायरेक्टर्स पैसे देकर फिल्म की फेक हाइप क्रिएट करते हैं. अब यामी गौतम ने इस मुद्दे पर अपनी आवाज उठाई है और श्धुरंधरश की रिलीज से पहले फिल्म पर लगने वाले सभी आरोपों को खारिज किया है. आज यामी गौतम ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट से सनसनी मचा दी है. एक्ट्रेस ने बॉलीवुड में हो रहे पेड मार्केटिंग को लेकर खुलकर बात की और डायरेक्टर्स समेत एक्टर्स से भी ऐसा ना करने की अपील की है. अपने लंबे चौड़े इंस्टाग्राम पोस्ट में यामी गौतम ने लिखा– शकाफी समय से मैं ये कहना चाह रही थी, मुझे लगता है आज ये सही समय है. फिल्म मार्केटिंग के नाम पर पैसे देने का जो ट्रेंड चल रहा है. इससे ये सुनिश्चित किया जाता है कि फिल्म का अच्छा हुए क्रिएट जाए.श शजब तक उन्हें पैसे नहीं देते, वो नेगेटिव चीजें लिखेंगे. .. श यामी आगे लिखती हैं– शवरना जब तक उन्हें पैसे न दो वो लोग लगातार फिल्म को लेकर नेगेटिव चीजें ही लिखते रहेंगे, वो भी फिल्म रिलीज होने के पहले ही.श यामी गौतम का मानना है ये जबरदस्ती पैसे वसूलने जैसा मामला है. इसके साथ ही एक्ट्रेस ने ये भी कहा कि अगर लंबे समय तक ऐसा ही चलता रहा तो ये प्लेग की तरह बॉलीवुड इंडस्ट्री को बहुत बड़े पैमाने पर इफेक्ट करेगा।

साउथ फिल्म इंडस्ट्री को लेकर भी कही ये बात यामी गौतम ने अपने शेयर किए हुए इस पोस्ट में बॉलीवुड से जुड़े हर एक शख्स को इस ट्रेंड को बढ़ावा न देने की अपील की. इसके साथ ही एक्ट्रेस ने साउथ फिल्म इंडस्ट्री की जमकर तारीफ भी की. अदाकारा ने अपने इस लेटेस्ट पोस्ट में लिखा कि ऐसे फेक प्रमोशंस और पेड मार्केटिंग साउथ से में नहीं होते और ऐसा इसलिए क्योंकि वहां के लोगों में यूनिटी देखी जा सकती है. यामी गौतम के स्पोर्ट में आएं कई सितारे धुरंधर के डायरेक्टर आदित्य धर की पत्नी यामी गौतम के इस लेटेस्ट पोस्ट ने सबका ध्यान खींचा है।

सर्दी–जुकाम और खांसी की छुट्टी कर देंगे ये 5 अमेजिंग जूस, स्वाद के साथ मिलेगी फिटनेस

सर्दियों में हम सभी को अपनी डाइट का खास ख्याल रखने की जरूरत होती है। क्योंकि हेल्दी और प्रॉपर डाइट लेने से न सिर्फ हमारा शरीर वार्म रहता है। बल्कि शरीर की इम्यूनिटी भी बढ़ती है। ऐसे में कई लोग सर्दियों में जूस का सेवन भी करते हैं। लेकिन सर्दियों में सोच–समझकर जूस का सेवन करना चाहिए। क्योंकि बिना समझे जूस आदि पीने से सर्दी–जुकाम हो सकता है। इसलिए सर्दियों में ऐसे फूड्स का जूस पीना चाहिए। जिनकी तासीर गर्म होती है। ऐसे में इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे जूस के बारे में बताने जा रहे हैं। जिनको पीने से आप हेल्दी और फिट रहेंगे।

गाजर–अदरक जूस

गाजर और अदरक जूस में विटामिन ए और विटामिन सी पाया जाता है। जो हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करने का काम करता है। यह जूस हमारी त्वचा को जवां और ग्लोइंग बनाता है। यह जूस शरीर में कोलेजन बढ़ाने के साथ ही त्वचा की इलास्टिसिटी को इम्प्रूव करता है। एक रिसर्च के मुताबिक अदरक के जूस में जिंजरोल पाया जाता है। जो कैंसर कोशिकाओं के विनाश को बढ़ावा देता है।

चुकंदर जूस

चुकंदर हमारे शरीर के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। ऐसे में आप सर्दियों में चुकंदर के जूस का सेवन कर सकते हैं। सर्दियों में चुकंदर के साथ अदरक डालकर इसका सेवन करने से शरीर को एंटीइंफ्लामेटरी, नाइट्रेट, एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन व मिनरल्स मिलेगा। अगर आप रोजाना 500 मिलीलीटर बीटरूट जूस पीते हैं। तो इससे 15 फीसदी तक शरीर की थकावट कम हो सकती है।

क्रैनबेरी जूस

क्रैनबेरी जूस में एंटीऑक्सीडेंट्स पाया जाता है। जो हमारी डायजेशन सिस्टम को ठीक करने के साथ इम्यूनिटी भी बढ़ाता है। क्रैनबेरी जूस में विटामिन सी और ई भरपूर मात्रा पायी जाती है। इस जूस का सेवन करने से हमारे शरीर से टॉक्सिन पदार्थ निकल जाता है। साथ ही यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन में भी राहत देने का काम करता है। आप संतरा, मौसंबी और अंगूर को मिलाकर क्रैनबेरी जूस बना सकते हैं।

सिट्रस फ्रूट जूस

सिट्रस फ्रूट जूस विटामिन सी से भरपूर होता है। यह इम्यूनिटी को स्ट्रांग करने के साथ ही इंफेक्शन और कोल्ड फ्लू से बचाता है। सिट्र्स फ्रूट जूस फ्लेवोनोइड्स दिल के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। साथ ही विटामिन सी के होने से यह त्वचा को ग्लोइंग बनाता है।

कीवी जूस

कीवी में कैरोटेनोइड्स, पॉलीपेनोल्स और डाइटरी फाइबर पाया जाता है। इसमें मौजूद तत्व कोल्ड और फ्लू से बचाने का काम करते हैं। साथ ही यह जूस झुर्रियों को कम करता है। जिससे हमारी त्वचा यूथफुल दिखती है।

यूरिक एसिड और जोड़ों के दर्द का इलाज है बथुआ का साग, ऐसे करें सेवन

यूरिक एसिड की समस्या आजकल लोगों में आम है। वहीं ठंड के समय में सही डाइट न रखने पर ये समस्या बढ़ सकती है। वहीं अगर लापरवाही की जाए तो यूरिक एसिड किडनी को भी करता है और साथ में गठिया के रोग का भी शिकार हो सकते हैं। इस वजह से बहुत जरूरी है की शरीर में यूरिक एसिड को कंट्रोल में रखा जाए। इससे बचने के लिए सबसे पहले तो अपनी डाइट में बदलाव करें। सर्दियों में बाजार में आपको बथुआ साग आसानी से मिल जाता है और ये यूरिक एसिड को कंट्रोल करने में सहायक है। आइए आपको बताते हैं बथुआ के साग खाने के बेशुमार फायदे.....

सूजन और जोड़ों के दर्द से मिलती है राहत

बथुआ का साग एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर होता है। वहीं इसमें फ्लेवोनोइड्स, पॉलीफेनोल्स और विटामिन ए और सी की भरपूर मात्रा होती है जो शरीर के फ्री रेडिलक्स को बेअसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वहीं इससे सूजन और जोड़ों के दर्द से भी काफी हद तक राहत मिलती है और यूरिक एसिड भी काफी हद तक कम होता है।

यूरिक एसिड को कंट्रोल करें

बथुआ साग शरीर में बढ़े हुए यूरिक एसिड को कम करता है। बता दें, यूरिक एसिड जमा होने पर जोड़ों में क्रिस्टलीकृत (पत्थरी बनना) हो सकता है, जिससे दर्द और परेशानी हो सकती है। बथुआ साग में फाइबर का उच्च स्तर गुर्दे के माध्यम से होने वाले यूरिक एसिड के निर्माण को रोकता है और गठिया के खतरे को कम करता है।

मिलता है भरपूर पोषण

बथुआ के साग में आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम और पोटेशियम जैसे कई पोषक तत्व होते हैं जो जोड़ों के कार्यों में सहायक और उन कमियों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण हैं जो जोड़ों के दर्द को बढ़ा सकती है। वहीं ये यूरिक एसिड के स्तर को कम करने का एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है।

शरीर को करता है डिटॉक्स

शरीर को डिटॉक्स करने के लिए लोग कई सारी ड्रिंक्स लेते हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि साग में मौजूद क्लोरोफिल खून और शरीर के विषाक्त पदार्थों को साफ करने में सहायक है। इससे शरीर में मौजूद जोड़ों के दर्द और सूजन को ट्रिगर करने वाले पदार्थ भी निकल जाते हैं।

ऐसे करें सेवन

वैसे तो आप बथुआ के साग को मक्की की रोटी के साथ लंच या डिनर में खा सकती हैं। उसके अलावा आप बथुआ का जूस बना के भी पी सकती हैं।

इसके लिए पहले बथुआ को साफ पानी में धोएं। अब एक टोप में पानी लेकर उसे उबालें। अब उबलते हुए पानी में बथुआ को डालें। जब ये ठंड हो जाए तो उसमे नींबू, काला नमक, जीरा मिक्सकर ग्राइंडर में अच्छी तरह पीस लें। पीसने के बाद उसे छानकर इस जूस को पी लें।

शुगर मरीजों के लिए वरदान है शकरकंद, जानिए 5 और लाजवाब फायदे

शकरकंद को स्वीट पोटैटो के नाम से भी जाना जाता है। ये एनर्जी का बहुत अच्छा सोर्स है। इसमें मौजूद विटामिन ए, मिनरल्स, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम और थायमिन जैसे एलिमेंट्स कई सारेीमंसजी इमदमपिजे देते हैं। इसके नियमित सेवन से व्यक्ति का पेट भरा रहता है, जिससे भूख कम लगती है और वेट लॉस में मदद मिलती है। बता दें इसमें आलू से ज्यादा स्टर्च होता है। इसे खाने से हड्डियां मजबूत होती हैं और इम्यूनिटी भी बूस्ट होती है। आइए आपको बताते हैं शकरकंद खाने के 5 लाजवाब फायदे....

ब्लड शुगर रही है कंट्रोल में

डायबिटीज के मरीजों के लिए भी शकरकंद बहुत फायदेमंद है। इसमें मौजूद यौगिक रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मददगार है। ब्लड शुगर को कंट्रोल करने के लिए शकरकंद को उबालकर खा सकते हैं। लेकिन अगर आपका ब्लड शुगल लेवल पहले ही बढ़ा हुआ है तो इसे खाने से पहले डॉक्टर से सलाह ले लें।

शरीर रहता है अंदर से गर्म

सर्दियों में मिलने वाली शकरकंद का असर गर्म होता है, इसलिए इन दिनों में इसे खाने फायदेमंद होता है। शकरकंद की गहरे रंग की प्रजाति में कैरोटिनॉयड जैसे बीटा–कैरोटीन और विटामिन ए ज्यादा मात्रा में पाया जाता है। 100 ग्राम शकरकंद में 400 फीसदी से ज्यादा विटामिन ए पाया जाता है।

इम्यूनिटी होती है स्ट्रांग

शकरकंद में मौजूद आयरन, फोलेट, कॉपर, मैगनीशियम, विटामिन्स आदि होते हैं, जिससे इम्यून सिस्टम मजबूत बनता है। इसको खाने से स्किन में चमक भी आती है और चेहरे पर झुर्रियां नहीं पड़ती हैं। इसमें मौजूद विटामिन सी त्वचा में कोलाजिन का निर्मण करता है, जिससे आप सदाबाहर जवां और खूबसूरत रहते हैं।

ब्लड प्रेशर रहता है कंट्रोल में

शकरकंद में अच्छी मात्रा में पोटैशियम होता है। इसे खाने से ब्लड प्रेशर की समस्या काफी हद तक कम होती है। इससे हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को कंट्रोल किया जा सकता है।

आयरन की कमी होती है पूरी

शकरकंद में भरपूर मात्रा में आयरन होता है। इसकी कमी होने पर शरीर में एनर्जी नहीं रहती है, ब्लड सेल्स का निर्माण कम होता है और इम्यूनिटी भी कमजोर होती है। शकरकंद खाकर आप शरीर में आयरन को पूरा कर सकते हैं।

दुनिया के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में से एक है बाली द्वीप

इंडोनेशिया का बाली द्वीप दुनिया के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में से एक है और यदि आप सोच रहे हैं कि यहां कब जाएँ, तो इस स्वर्ग की यात्रा के लिए दिसंबर एक बेहतरीन महीना है। शानदार समुद्र तट रिसॉर्ट्स और रोमांटिक विला इसे एक आदर्श हनीमून गंतव्य भी बनाते हैं। आराम और रोमांच दोनों के लिए बाली द्वीप अपने आप में एक संपूर्ण पैकेज है और दिसंबर में घूमने के लिए शीर्ष स्थलों में से एक है।

बाली में घूमने की जगहें

सेकुम्पुल वॉटरफॉल

सेकुम्पुल जलप्रपात बाली के उत्तरी पहाड़ों में स्थित है, जो कंगु, सेमिन्याक, कुटा और उबुद के मुख्य पर्यटन केंद्रों से लगभग 2.5 घंटे की ड्राइव पर है। यह बाली के सबसे अच्छे पर्यटक आकर्षणों में से एक है।

नुसा द्वीप

इंडोनेशिया के दक्षिण पूर्व में स्थित एक द्वीप है। यह तीन द्वीपों के एक समूह का हिस्सा है जो नुसा पेनिडा जिले को बनाते हैं, जिनमें से यह नुसा पेनिडा, नुसा लेम्बोंगन और नुसा सेनिंगन के तीन द्वीपों में से सबसे प्रसिद्ध है– जिसे एक साथ ''नुसा द्वीप'' के रूप में जाना जाता है। यह द्वीप समूह लेसर सुंडा द्वीप समूह का हिस्सा है।

अगुंग राय कला संग्रहालय

अगुंग राय संग्रहालय दृश्य और प्रदर्शन कलाओं का एक केंद्र है, जो आगंतुकों को ऐतिहासिक चित्रों के स्थायी संग्रह, थिएटर, नृत्य, संगीत और पेंटिंग कक्षाओं, किताबों की दुकान, पुस्तकालय और वाचनालय, सांस्कृतिक कार्यशालाओं, सम्मेलनों, सेमिनारों का आनंद प्रदान करता है।

पुरी अगुंग सेमरपुरा (क्लुंगकुंग पैलेस)

क्लुंगकुंग पैलेस, एक ऐतिहासिक इमारत परिसर है। बताया जाता है कि यह महल 17वीं शताब्दी के अंत में बनाया गया था, लेकिन 1908 में डच औपनिवेशिक विजय के दौरान बड़े पैमाने पर नष्ट हो गया था। पुराने महल परिसर के भीतर एक तैरता हुआ मंडप, बाले केंबांग भी है।

बेसाकीह मंदिर

बेसाकिह मंदिर, हिंदू धर्म का सबसे महत्वपूर्ण, सबसे बड़ा और पवित्रतम मंदिर है, और बालिनी मंदिरों की श्रृंखला में से एक है। यह गुनुंग अगुंग के किनारे लगभग 1000 मीटर की दूरी पर स्थित, 23 अलग–अलग लेकिन संबंधित मंदिरों का एक व्यापक परिसर है जिसमें सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण पुरा पेनाटरन अगुंग है। यह मंदिर छह स्तरों पर बना है।

खरीदारी के लिए चीज़ें– बाली बाटिक, कॉफ़ी और चॉकलेट, लकड़ी की मूर्तियाँ और हस्तशिल्प, बुने हुए बैग

दिसंबर में मौसम– बाली जाने का सबसे अच्छा समय दिसंबर है, क्योंकि इस दौरान मौसम अद्भुत होता है

कैसे पहुंचें– बाली के लिए भारत के विभिन्न शहरों से नियमित उड़ानें हैं।

संक्षिप्त

Indigo पर GST को लेकर लगभग 59 करोड़ रुपये का जुर्माना, कंपनी आदेश को देगी चुनौती

देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो पर जीएसटी से संबंधित लगभग 59 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया है। एयरलाइन ने शुक्रवार को शेयर बाजार को यह जानकारी दी। दक्षिण दिल्ली आयुक्त कार्यालय के केंद्रीय माल एवं सेवा कर (सीजीएसटी) के अतिरिक्त आयुक्त ने वित्त वर्ष 2020–21 के लिए 58,74,99,439 रुपये का जुर्माना लगाया है। इंडिगो का कहना है कि वह इस आदेश को चुनौती देगी। कंपनी ने बीएसई को दी जानकारी में कहा कि विभाग ने जीएसटी की मांग के साथ जुर्माना भी लगाया है। एयरलाइन ने कहा, हमारा मानना है कि अधिकारियों द्वारा पारित आदेश त्रुटिपूर्ण है। इसके अलावा हमारे पास इस मामले में मजबूत आधार हैं, जिनका समर्थन बाहरी कर विशेषज्ञों की सलाह से भी मिलता है। इसलिए कंपनी इस आदेश को संबंधित प्राधिकरण के समक्ष चुनौती देगी। एयरलाइन ने यह भी स्पष्ट किया कि इस कार्रवाई का उसके वित्त, संचालन या अन्य गतिविधियों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ेगा।

इंडिगो सीईओ लगातार दूसरे दिन डीजीसीए की समिति के समक्ष हुए पेश

इंडिगो में परिचालन संकट की जांच कर रही उच्चस्तरीय समिति के समक्ष एयरलाइन के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) पीटर एल्बर्स शुक्रवार को लगातार दूसरे दिन पेश हुए। सूत्रों ने बताया कि नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की तरफ से गठित चार–सदस्यीय समिति ने एयरलाइन के सीईओ के अलावा मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) इसिद्रो पोर्केरास से भी कई घंटों तक पूछताछ की। सूत्रों ने पीटीआई–से

कहा कि एयरलाइन के दोनों शीर्ष अधिकारियों को चार–सदस्यीय पैनल के सामने अलग–अलग बुलाया गया। एल्बर्स करीब सात घंटे और पोर्केरास लगभग पांच घंटे पैनल के समक्ष रहे। इस दौरान समिति ने इंडिगो के परिचालन में पैदा हुए व्यापक व्यवधान से जुड़े बिंदुओं पर कंपनी के शीर्ष अधिकारियों से सवाल पूछे। एक दिन पहले भी एल्बर्स डीजीसीए के पैनल के समक्ष पेश हुए थे। दिसंबर की शुरुआत से लेकर करीब एक सप्ताह तक इंडिगो की करीब 5000 उड़ानें रद्द होने से समूचे विमानन परिदृश्य में अफरातफरी की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। हालांकि सरकार की तरफ से दबाव डाले जाने और नियामकीय सक्रियता के बाद इंडिगो की उड़ानों का परिचालन एक हद तक सामान्य स्थिति की तरफ बढ़ता दिख रहा है। इंडिगो ने शुक्रवार को 2,000 से अधिक उड़ानें संचालित कीं।

एफपीआई के इक्विटी और ऋण बाजार में बिकवाली से रुपये पर दबाव, सोने–चांदी में और तेजी का अनुमान

मुंबई। हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को रुपये में डॉलर के मुकाबले बड़ी गिरावट देखने को मिली और रुपया 24 पैसे टूटकर 90.56 के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी ने 65 डॉलर प्रति औंस के करीब पहुंचकर नया रिकॉर्ड बनाया, जबकि सोने की कीमतें सात सप्ताह के ऊंचाई पर देखने को मिली। कोटक सिक्योरिटीज के मुद्रा और कमोडिटी प्रमुख अनिंद्य बनर्जी बताते हैं, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) के इक्विटी और डेट मार्केट दोनों में पैसे निकालने की वजह से रुपये में दबाव बना हुआ है। बढ़ती ग्लोबल यील्ड ने यूएसडी और जेपीवाई फंडेड कैरी पोजिशन को बड़े पैमाने पर कम कर दिया है, जिससे भारतीय बॉन्ड और आगे चलकर करेंसी पर और दबाव बढ़ गया है। अच्छी बात यह है कि भारत–अमेरिका व्यापार वार्ता समझौता प्रगति पर है। इसकी वजह से कई क्षेत्रों में मदद मिल रही है और निकट भविष्य में इससे जल्द ही डेप्रिसिएशन की रफ्तार धीमी हो सकती है। सभी कारकों को देखते हुए हम उम्मीद करते हैं कि यूएस डॉलर के मुकाबले रुपया काफी हद तक रेंज बाउंड रहेगा, जिससे 89.50 से 91.00 के बीच देखा जा सकता है। जियोजित इंवेस्टमेंट लिमिटेड रिसर्च एनालिस्ट एंटू इपेन थॉमस कहते हैं, रुपये के कमजोर होने की वजह भारती–अमेरिका व्यापार समझौते में देरी को लेकर अनिश्चितता, विदेशी पोर्टफोलियो का भारी आउटफ्लो, डॉलर के लिए निर्यातकों की बढ़ती मांग– खासकर तेल के लिए और यूएस के भारी टैरिफ हैं, जो आयातकों को नुकसान पहुंचा रहे हैं, जिससे करंट अकाउंट घाटे में है। वे कहते हैं, कमजोर होते रुपये से अमेरिकी डॉलर में कीमत वाली कमोडिटी की लैंडेड कॉस्ट बढ़ जाती है। इस बीच, चांदी को मजबूत निवेश मांग, बढ़ते औद्योगिक इस्तेमाल और हाल ही में फेड रेट ब्याज दरों में कटौती से सपोर्ट मिल रहा है। चांदी की मांग अक्सर सोने के साथ बढ़ती है क्योंकि दोनों मेटल को सेफ–हेवन एसेट माना जाता है। कमजोर डॉलर के माहौल और ग्लोबल रिस्क सेंटिमेंट जैसे बड़े मैक्रो डायनामिक्स ने मांग बढ़ाने में मदद की है।विशेषज्ञों के अनुसार अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने चौथाई बिंदू दर में कटौती के बाद सुरक्षित निवेश की मांग में तेजी आने से पिछले कारोबारी सत्रों में सीमित दायरे में रहने के बाद गुरुवार यानी 11 दिसंबर को सोने की कीमतों में तेजी देखने को मिली। वहीं मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीडीक्स) पर सोने का फरवरी 2026 वायदा अनुबंध पिछले बंद भाव से 1,29,796 रुपये की तुलना में 1,30,250 रुपये प्रति 10 ग्राम के उच्च स्तर पर खुला।

बड़े लक्ष्य का दबाव ? उथप्पा ने भारतीय बल्लेबाजी पर उठाए सवाल, भूमिका में स्पष्टता की कमी बताई वजह

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में भारत को 51 रन से हार का सामना करना पड़ा। 214 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम 19.1 ओवर में 162 रन पर सिमट गई। इस हार के बाद टीम इंडिया की बल्लेबाजी रणनीति पर सवाल उठने लगे हैं, खासकर बड़े लक्ष्य के पीछा करने के दौरान अपनाए गए अप्रोच को लेकर प्रश्नचिह्न खड़े हो रहे हैं।

उथप्पा ने रणनीति पर उठाए सवाल

पूर्व भारतीय बल्लेबाज रॉबिन उथप्पा ने कहा कि समस्या शुरुआती विकेट गिरने की नहीं थी, बल्कि बल्लेबाजों की भूमिका को लेकर स्पष्टता की कमी थी। उनके मुताबिक पारी के शुरुआती ओवरों में जरूरत से ज्यादा लचीलापन (फ्लेक्सिबिलिटी) रन बनाने को और जटिल बना देता है।

गिल के आउट होने के बाद बदली दिशा

उथप्पा ने खासतौर पर शुभमन गिल के आउट होने के बाद की रणनीति पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि जब गिल आउट हुए, तब भारत के पास गहरी बल्लेबाजी लाइन–अप मौजूद थी। ऐसे में अक्षर पटेल को एक पिंच–हिटर की भूमिका निभानी चाहिए थी, ताकि तेजी से रन बनाकर दबाव कम किया जा सके और अभिषेक शर्मा को सहयोग मिल सके।

अक्षर पटेल की पारी से नहीं मिला फायदा

उथप्पा के मुताबिक, अक्षर पटेल की संभली हुई 21 रन की पारी (रन–ए–बॉल) दबाव कम करने में नाकाम रही। इससे उल्टा यह हुआ कि विकेट गिरते गए और रन रेट का दबाव और बढ़ता चला गया। नतीजतन भारतीय बल्लेबाजी की रफ्तार और धीमी हो गई, जिससे लक्ष्य और मुश्किल होता चला गया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भूमिका की स्पष्टता जरूरी

रॉबिन उथप्पा ने साफ शब्दों में कहा कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बल्लेबाजों के लिए स्पष्ट भूमिका

और स्पष्ट योजना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि बल्लेबाजों को पहले से पता होना चाहिए कि उन्हें किस तरह पारी बनानी है और किस परिस्थिति में कौन–सा जोखिम लेना है।

जरूरत से ज्यादा फ्लेक्सिबिलिटी बनी परेशानी

उथप्पा का मानना है कि शुरुआती छह से आठ ओवरों के बाद मैच–अप के हिसाब से फ्लेक्सिबिलिटी ठीक है, लेकिन उससे पहले मजबूत नींव बनाना जरूरी है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा, "आप बिना नींव के गगनचुंबी इमारत नहीं बना सकते।" उनके मुताबिक, एक ही मैच में खिलाड़ियों से कई भूमिकाओं की उम्मीद करना रन बनाने को और जटिल बना देता है।

2007 विश्व कप विजेता टीम के सदस्य की राय

2007 टी20 विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम का अहम हिस्सा रहे उथप्पा ने कहा कि वह पारी की शुरुआत में ओपनर्स के अलावा बाकी बल्लेबाजों के लिए जरूरत से ज्यादा लचीलापन रखने के पक्ष में नहीं हैं। उनके अनुसार, भारत को बड़े लक्ष्य के पीछा में स्पष्ट रोल्स के साथ उतरने की जरूरत है, तभी ऐसी परिस्थितियों में बेहतर नतीजे मिल सकते हैं।

मेक्सिको में टैरिफ बढ़ने से भारत के ऑटो निर्यात पर पड़ेगा असर, कंपनियों के वॉल्यूम और मार्जिन पर खतरा

मुंबई। मेक्सिको की सीनेट ने राष्ट्रीय उद्योग और उत्पादकों की रक्षा के लिए टैरिफ पैकेज को मंजूरी दी है। यह टैरिफ पैकेज 1 जनवरी 2026 से लागू होगा। भारत और चीन सहित एशियाई देशों के चुनिंदा उत्पादों पर वर्ष 2026 से 50 प्रतिशत तक आयात शुल्क लगेगा। इसके तहत ऑटो, ऑटो पार्ट्स, टेक्सटाइल, कपड़े, प्लास्टिक, स्टील, मेटल और फुटवियर मुख्य टारगेट हैं, अधिकतर उत्पादों पर टैरिफ 35 प्रतिशत स्लैब के आसपास होंगे, लेकिन पैसेंजर व्हीकल शुल्क 20 प्रतिशत से बढ़कर 50 प्रतिशत हो जाएगा।

भारतीय ऑटोमोबाइल सेक्टर पर पड़ेगा ज्यादा असर

उद्योग का कहना है, भारत से मेक्सिको होने वाले ऑटोमोबाइल सेक्टर से वाहनों का निर्यात, जो कि 2024–25 में मेक्सिको को लगभग 5.7 अरब डॉलर का सामन निर्यात किया, जिसमें वाहनों का हिस्सा लगभग एक तिहाई था। लेकिन अब मैक्सिको द्वारा लगाए गए टैरिफ की वजह से ऑटोमोबाइल सेक्टर पर विशेष असर पड़ने की संभावना है। हुंइई की क्रेटा, किआ की मैग्राइट और फॉक्सवैग जैसी भारतीय निर्मित कारें मेक्सिको में काफी लोकप्रिय है। भारत मेक्सिको का पांचवां सबसे बड़ा ऑटो आपूर्तिकर्ता है। टैरिफ शुल्क दोगुने होने से भारतीय ऑटो उद्योग को नुकसान होने की संभावना है।

ऑटो उद्योग ने जताई चिंता

भारतीय ऑटो उद्योग ने मेक्सिको द्वारा मुक्त व्यापार समझौता से वंचित देशों पर आयात शुल्क को दोगुना से अधिक बढ़ाने के प्रस्ताव पर सरकार के सामने चिंता जताई है। इस विषय पर सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (एसआईएएम) और ऑटो कंपोनेट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एसीएमए) के प्रतिनिधियों ने वाणिज्य और भारती उद्योग मंत्रालयों के अधिकारियों से मुलाकात कर विदेशी बाजार में वाहन और पुर्जों के निर्यात में होने वाले चुनौतियों को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की है।

दिग्गज ऑटो कंपनियों के वॉल्यूम और मार्जिन पर खतरा

सैमको सिक्योरिटीज के रिसर्च विशेषज्ञ जाहोल प्रजापति ने बताया, मेक्सिको को भारतीय कार निर्यातकों मुख्य रूप से फॉक्सवैगन, हुंडई, मारुति सुजुकी को इसका सीधा असर पड़ रहा है, जिससे उस मार्केट में वॉल्यूम और मार्जिन पर खतरा है, जो कि भारत के वैश्विक ऑटोमोबाल निर्यात का लगभग 9 प्रतिशत है। जापति कहते हैं, ऑटो के अलावा, इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स और मेटल पर बढ़े हुए टैरिफ से इनकी मांग में कमी आने की संभावना है। हालांकि कुछ विशेष भारतीय उत्पाद, जिनका मार्केट शेयर मजबूत है, उन्हें वॉल्यूम के बजाय कीमत का नुकसान हो सकता है।

भारत के कार निर्यात बाजार को हो सकता नुकसान

ऑटो सेक्टर के विशेषज्ञ चिंतन साठे कहते हैं, भारत के कार निर्यातकों के लिए मेक्सिकों एक प्रमुख गंतव्य है। पिछले वित्तीय वर्ष में 887 मिलियन डॉलर (7,900 करोड़ रुपये) का योगदान, जिससे यह दक्षिण अफ्रीका और सऊदी अरब के बाद तीसरा सबसे बड़ा बाजार बन गया है।

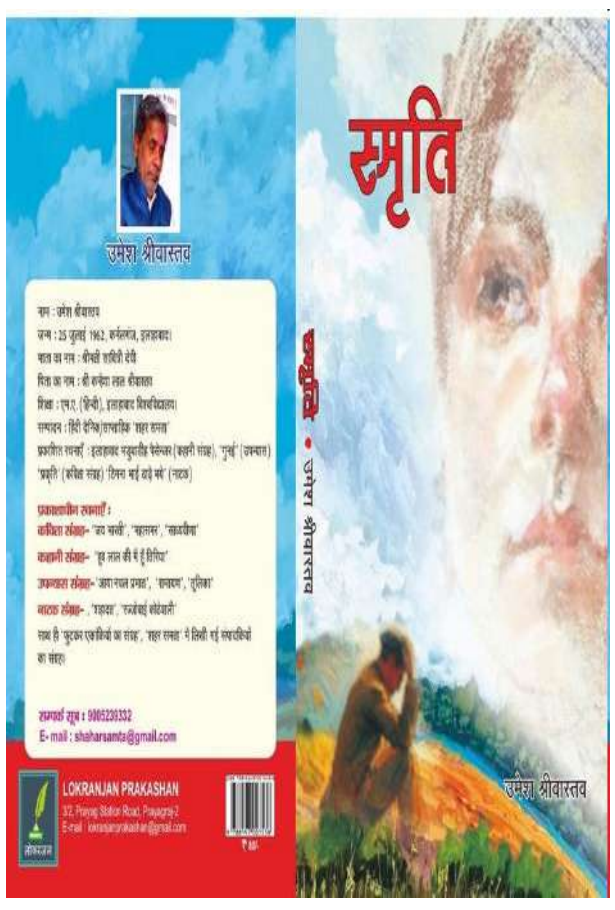

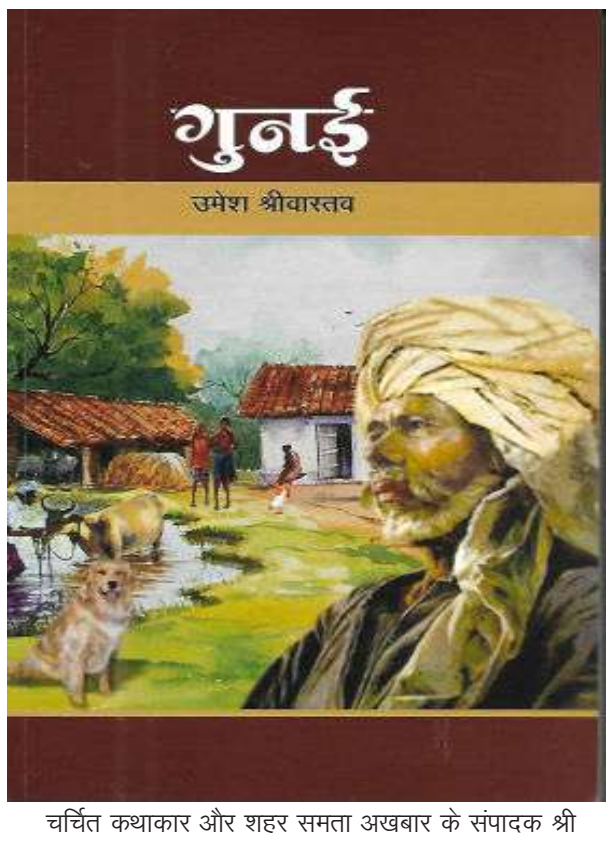

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

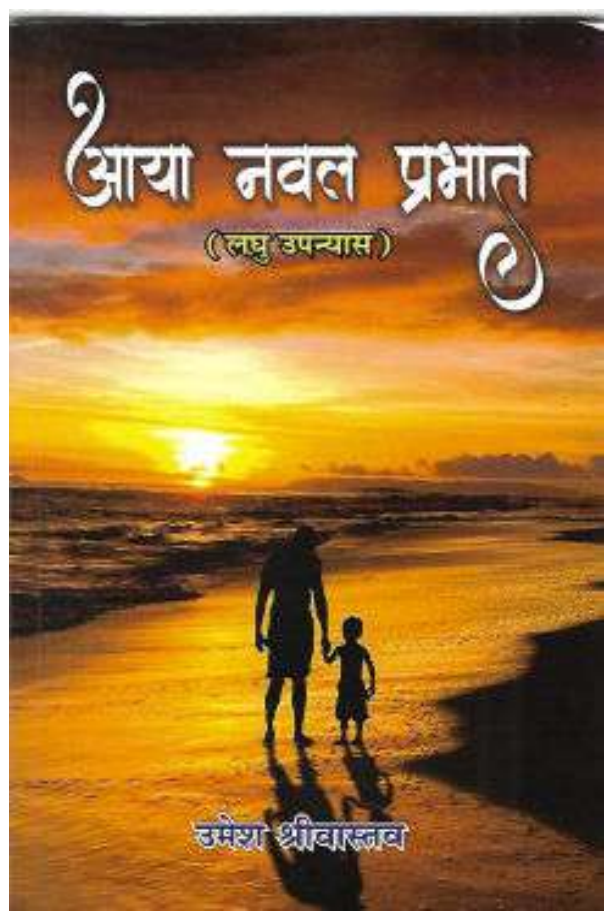

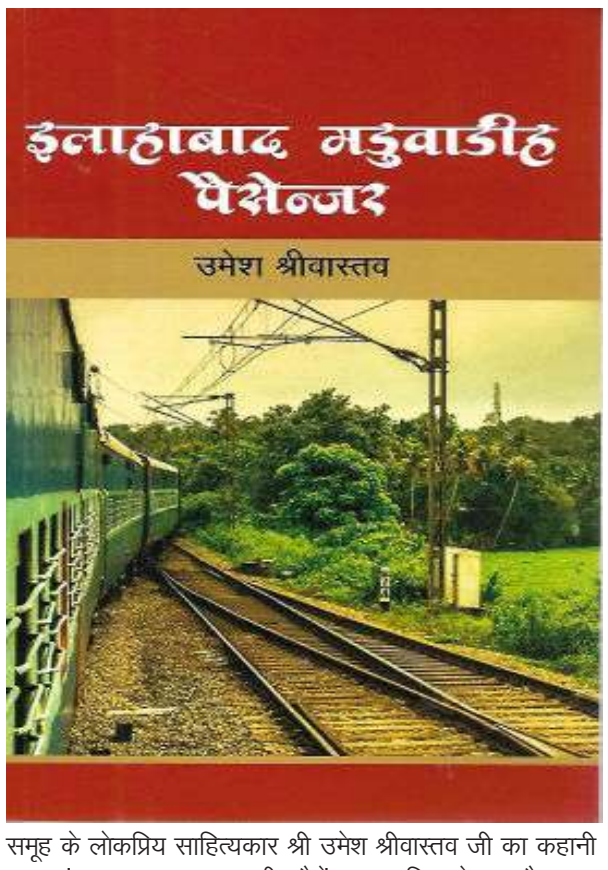

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

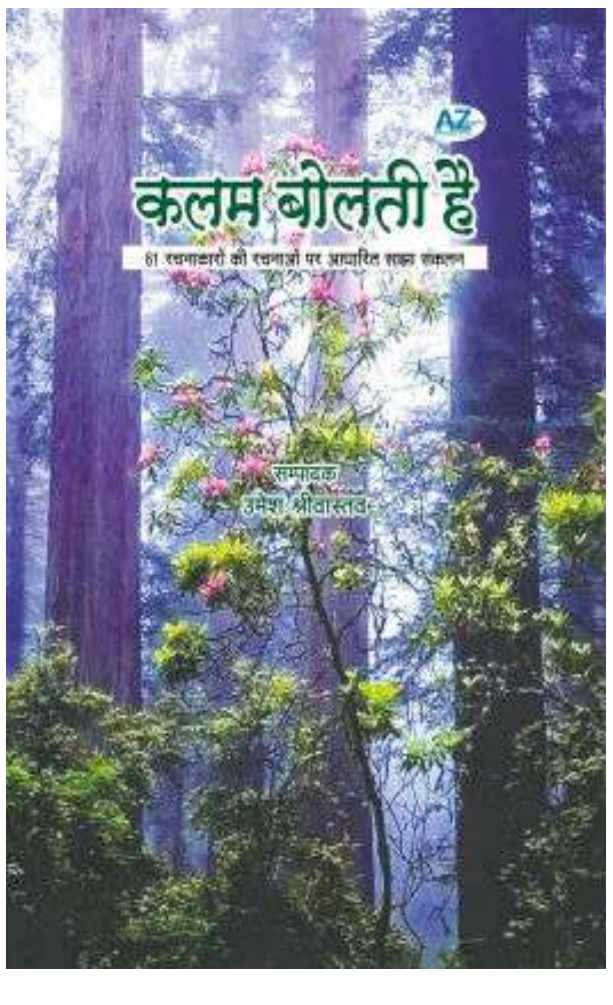

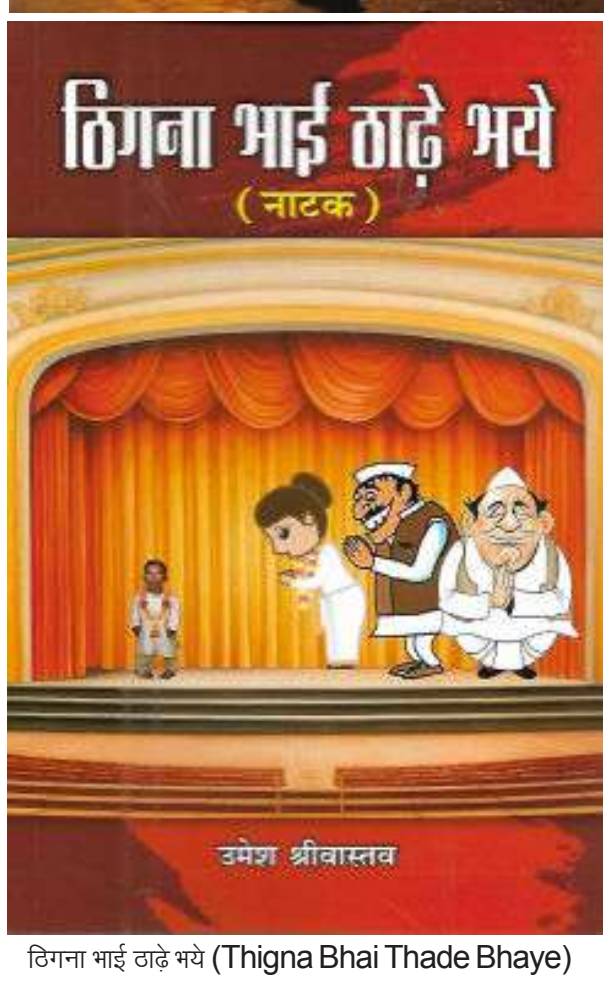

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

1 ट्रिलियन डॉलर का सरप्लस कारोबार, ट्रंप के टैरिफ को किनारे लगा चीन कैसे बना दुनिया का ट्रेड किंग

बड़े बड़े अरमानों के साथ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दुनिया को टैरिफ की जंग में उलझाया। सपना यह था कि दुनिया की जितनी भी इंडस्ट्रीज हैं, मैन्युफैक्चरिंग है, वो सब अमेरिका शिफ्ट हो जाएंगी। अमेरिका के लोगों को बहुत सारी नौकरियां मिलेंगी और अल्टीमेटली अमेरिकन गवर्नमेंट को बहुत सारा रेवेन्यू आएगा। लेकिन हुआ इसका ठीक उलट। आलम ये है कि अमेरिका का सबसे बड़ा दुश्मन चीन साल के 11वें महीने तक ट्रेड सरप्लस +1 ट्रिलियन को भी क्रॉस कर चुका है। यह पहली बार हुआ है रिकॉर्ड ट्रेड सरप्लस चाइना को हुआ है। एक बात आपको बता दूं कि ऐसा पहली दफा नहीं है कि जब ट्रंप ने टैरिफ कार्ड खेला हो। अपने पहले कार्यकाल में भी वो ऐसा कर चुके हैं। उन्होंने चाइना पर काफी टेरिफ लगाया था। लेकिन चीन सिर्फ इकोनॉमिक डैमेज से बचा नहीं है बल्कि ऐतिहासिक एक्सपोर्ट बूम किया है। मतलब अमेरिका ने जो सोचा था कि चीन का एक्सपोर्ट कम हो जाएगा। चीजें उससे बिल्कुल उलट हुई। वो ऊपर की तरफ गया है और 2025 तक चाइना का ग्लोबल ट्रेड सरप्लस 1.0 1.08 ट्रिलियन को क्रॉस कर गया। 2010 के आंकड़ों पर गौर करें तो चीन का ट्रेड सरप्लस 200 बिलियन से भी कम था और धीरे–धीरे करके चीन ने इसको बढ़ाया। अब ये 1 ट्रिलियन डॉलर को क्रॉस कर चुका है। चीन को यह बात समझ में आ गई कि वो अब अमेरिका के ऊपर बहुत लंबे समय तक निर्भर नहीं हो सकता और उसकी वजह से उसने बहुत सारे बाकी के मार्केट्स को ढूंढा। वहां पर एक्सपोर्ट करना स्टार्ट किया। मतलब जो गुड्स पहले अमेरिका जाता था उसके बजाय बाकी के देशों में एक्सपोर्ट करना शुरू किया। जैसे अफ्रीका वहां पर चीन का एक्सपोर्ट 42: बढ़ा हुआ है। यूरोप में 15प्रतिशत बढ़ा हुआ है। लैटिन अमेरिका में भी डबल डिजिट ग्रोथ हुई है। तो यह जो स्ट्रेटेजिक शिफ्ट था इसकी वजह से जो उसको नुकसान हो रहा था यूएस मार्केट से वो उल्टा यहां पर और ज्यादा फायदा होने लग गया।

सप्लाई चेन रीइजीनियरिंग

चीन ने बड़ी चालाकी की है कि जो फाइनल असेंबली होती है, उदाहरण के लिए मोबाइल फोन को ले सकते हैं। अब मोबाइल फोन में तो बहुत सारे कॉम्पोनेंट होते हैं। तो ज्यादातर जो कोर कॉम्पोनेंट है वो चीन खुद बना रहा है और जो उसका फाइनल असेंबली होती है उसको बाकी के देशों में कर रहा है। अफ्रीका में यूरोप में ताकि वहां से उसको अमेरिका में एक्सपोर्ट किया जा सके। अमेरिकी टैरिफ को बाइपास करने का जोरदार तरीका चीन ने निकाल लिया।

करेंसी एडवांटेज

चीन अक्सर एक चालाकी करता है कि अपनी जो करेंसी है उसको थोड़ा सा कमजोर कर देता है जिससे कि उसका एक्सपोर्ट चीपर हो जाए, सस्ता हो जाए और इसकी वजह से वो और ज्यादा कॉम्पिटेटिव हो जाता है और ज्यादा एक्सपोर्ट कर पाता है बाकी के मार्केट्स में।

50% टैरिफ तुरंत हटाओ...भारत को लेकर अमेरिकी संसद में हो गया हंगामा, ट्रंप के फैसले के खिलाफ प्रस्ताव पेश

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के तीन सदस्यों ने शुक्रवार को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भारतीय आयात पर 50 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने वाली राष्ट्रीय आपातकाल घोषणा को समाप्त करने के लिए एक प्रस्ताव पेश किया। प्रतिनिधि सभा के सदस्यों डेबोरा रॉस, मार्क वेसी और राजा कृष्णमूर्ति ने इन उपायों को अवैध और अमेरिकी श्रमिकों, उपभोक्ताओं और अमेरिका–भारत संबंधों के लिए हानिकारक बताया। यह कदम ब्राजील पर इसी तरह के

टैरिफ हटाने और आयात शुल्क के लिए राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियों को सीमित करने के लिए सीनेट में द्विदलीय प्रयासों के बाद उठाया गया है। उनके प्रस्ताव का लक्ष्य 27 अगस्त, 2025 को पहले से लागू रिसीप्रोकल टैरिफ के अलावा अलग से लगते गए 25 प्रतिशत शुल्क को हटाना है, जिसके कारण कई भारतीय उत्पादों पर अंतर्राष्ट्रीय आपातकालीन आर्थिक शक्तियां अधिनियम (प्म्च्।) के तहत 50 प्रतिशत तक शुल्क लग जाता है। कांग्रेसवुमन रॉस ने कहा कि व्यापार, निवेश और जीवंत भारतीय अमेरिकी समुदाय के माध्यम से उत्तरी कैरोलिना की अर्थव्यवस्था भारत से गहराई से जुड़ी हुई है। उन्होंने बताया कि भारतीय कंपनियों ने राज्य में एक अरब डॉलर से अधिक का निवेश किया है, जिससे जीवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हजारों नौकरियां पैदा हुई हैं, जबकि उत्तरी कैरोलिना प्रतिवर्ष भारत को करोड़ों डॉलर का सामान निर्यात करता है। कांग्रेसी वीसे ने आगे कहा कि भारत एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक साझेदार है, और ये अवैध टैरिफ उत्तरी टेक्सास के आम नागरिकों पर बोझ हैं जो पहले से ही बढ़ती लागतों से जूझ रहे हैं। भारतीय–अमेरिकी कांग्रेसी राजा कृष्णमूर्ति ने इन टैरिफों को प्रतिकूल बताते हुए कहा कि इनसे आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित होती हैं, अमेरिकी कामगारों को नुकसान पहुंचता है और उपभोक्ताओं के लिए लागत बढ़ती है। उन्होंने यह भी कहा कि इन्हें हटाने से अमेरिका–भारत के आर्थिक और सुरक्षा संबंध मजबूत होंगे।

कानूनी पेंच में फंसे ट्रंप! 20 राज्यों ने ठोका मुकदमा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एच1बी वीजा को लेकर अपने घर में ही घिरते नजर आ रहे है। 20 राज्यों ने मुकदमा ठोक दिया है। कैलिफोर्निया की अगुवाई में वीजा फीस बढ़ाने पर ट्रंप का विरोध किया गया है। एच1बी वीजा को लेकर 1 लाख डॉलर के चार्ज के खिलाफ 20 राज्यों ने मुकदमा किया है। राज्यों का तर्क है कि यह नीति गैरकानूनी है और शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा सहित आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं के लिए खतरा है। कैलिफोर्निया के अटॉर्नी जनरल रॉब बोंटा, जिनका कार्यालय इस मुकदमे का नेतृत्व कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रशासन के पास इतनी अधिक फीस लगाने का अधिकार नहीं है। बोंटा ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा लगाई गई अवैध 100,000 डॉलर की एच–1बी वीजा फीस सार्वजनिक नियोक्ताओं और आवश्यक सेवाओं के प्रदाताओं पर अनावश्यक वित्तीय बोझ डालती है, जिससे श्रम की कमी और बढ़ जाती है। गृह सुरक्षा विभाग (डीएचएस) ने सितंबर 2025 में यह शुल्क लागू किया, जो 21 सितंबर के बाद दायर किए गए एच–1बी आवेदनों पर लागू होता है। डीएचएस ने सचिव को यह तय करने का अधिकार दिया है कि किन आवेदनों पर यह शुल्क लागू होगा या किन आवेदनों को छूट दी जाएगी। यह नीति अस्पतालों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य सार्वजनिक सेवा प्रदाताओं को प्रभावित करती है जो कुशल विदेशी श्रमिकों पर निर्भर हैं। राज्यों का दावा है कि यह शुल्क प्रशासनिक प्रक्रिया अधिनियम और अमेरिकी संविधान का उल्लंघन करता है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र

शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र

मोबाईल नम्बर. 9190052 39332

.919450482227

बंटवारे के बाद पहली बार पाकिस्तान में पढ़ाई जाएगी संस्कृत, महाभारत–गीता के श्लोकों का अध्ययन

विभाजन के बाद पहली बार, संस्कृत पाकिस्तानी कक्षाओं में वापसी कर रही है। लाहौर यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एलयूएमएस) ने कथित तौर पर इस शास्त्रीय भाषा में चार क्रेडिट का पाठ्यक्रम शुरू किया है, जो देश में संस्कृत अध्ययन को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक दुर्लभ संस्थागत प्रयास का संकेत है। संस्कृत पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने का श्रेय काफी हद तक फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में समाजशास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. शाहिद रशीद के प्रयासों को जाता है, जिन्होंने इस भाषा का अध्ययन करने में कई वर्ष बिताए हैं। डॉ. रशीद ने द ट्रिब्यून को बताया, शास्त्रीय भाषाओं में मानव जाति के लिए अपार ज्ञान समाहित है। मैंने अरबी और फारसी सीखने से शुरुआत की और फिर संस्कृत का अध्ययन किया" उन्होंने आगे कहा कि उनकी अधिकांश शिक्षा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से हुई। उन्होंने कहा कि शास्त्रीय संस्कृत व्याकरण को पूरा करने में लगभग एक साल लग गया। और मैं अभी भी इसका अध्ययन कर रहा हूँ। तीन महीने की सप्ताहांत कार्यशाला से विकसित इस पाठ्यक्रम ने छात्रों और विद्वानों के बीच काफी रुचि जगाई।

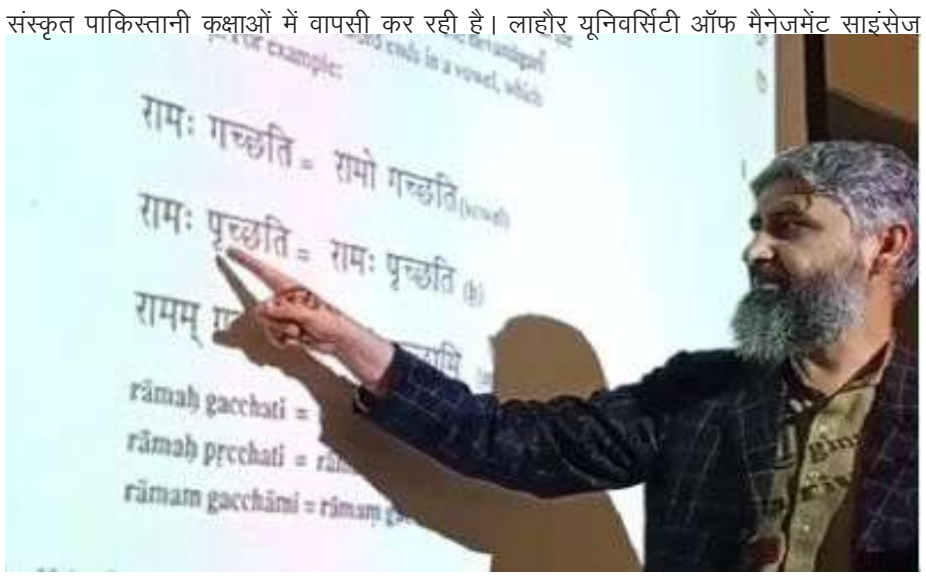

लुईएमएस के गुरमणि केंद्र के निदेशक डॉ. अली उस्मान कास्मी ने कहा कि पाकिस्तान के पास इस क्षेत्र में सबसे समृद्ध लेकिन सबसे कम खोजे गए संस्कृत संग्रहों में से एक है। द ट्रिब्यून से बात करते हुए, उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय के ताड़ के पत्तों पर लिखे पांडुलिपियों के विशाल संग्रह की ओर इशारा किया। संस्कृत के ताड़ के पत्तों पर लिखे पांडुलिपियों के एक महत्वपूर्ण संग्रह को 1930 के दशक में विद्वान जे.सी.आर. वूलनर द्वारा सूचीबद्ध किया गया था, लेकिन 1947 के बाद से किसी भी पाकिस्तानी शिक्षाविद ने इस संग्रह पर काम नहीं किया है। इसका उपयोग केवल विदेशी शोधकर्ता ही करते हैं। स्थानीय स्तर पर विद्वानों को प्रशिक्षित करने से यह स्थिति बदलेगी। डॉ. रशीद ने बताया कि उनसे अक्सर संस्कृत पढ़ने के उनके निर्णय पर सवाल उठाए जाते हैं, जबकि संस्कृत भाषा को आमतौर पर हिंदू धार्मिक ग्रंथों से जोड़ा जाता है। उन्होंने एक अंग्रेजी दैनिक को बताया मैं उनसे कहता हूँ, हमें इसे क्यों नहीं सीखना चाहिए? यह पूरे क्षेत्र की जोड़ने वाली भाषा है। संस्कृत व्याकरणविद् पाणिनि का गाँव इसी क्षेत्र में था। सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान यहाँ बहुत लेखन कार्य हुआ था। संस्कृत एक पर्वत की तरह है दृ एक सांस्कृतिक धरोहर। हमें इसे अपनाना चाहिए। यह हमारी भी है; यह किसी एक विशेष धर्म से बंधी नहीं है।

जगुआर के कल–पुर्जे, आईटी और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रों में नई संभावनाएं

15 दिसंबर से इन तीन देशों के दौरे पर रहेंगे पीएम मोदी

15 दिसंबर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीन देशों की यात्रा पर जाने वाले हैं। जॉर्डन ओमान की यात्रा पर प्रधानमंत्री रहने वाले हैं। द्विपक्षीय संबंधों के ऊपर चर्चा की जाएगी। साथ–साथ देशों के साथ में और ज्यादा दोस्ती गहरी करने के ऊपर चर्चा की जाएगी। तो आपको बता देते हैं कि किंग अब्दुल्ला के निमंत्रण पर पहले यह जॉर्डन का दौरा होने वाला है जो कि 15 दिसंबर से शुरू हो रहा है। उसके बाद में फिर इथोपिया और ओमान का दौरा करने वाले हैं प्रधानमंत्री। तो तीन देशों का यह दौरा है। 15 दिसंबर से ये दौरा शुरू होने वाला है। किंग अब्दुल्ला के निमंत्रण पर खासतौर पर जा रहा है। ऐसे में जो स्वागत है वो भी खास होने वाला है और जो मुलाकात है किंग अब्दुल्ला के साथ में वो सबसे ज्यादा खास होने वाली है।

कई अहम फैसलों की उम्मीद

पीएम मोदी के तीन देशों के दौरे के दौरान कई अहम फैसले लिए जाने की उम्मीद है। व्यापारिक और आर्थिक रिश्तों को मजबूत करने के साथ–साथ ओमान से लड़ाकू विमान जगुआर के कलपुर्जे (स्पेयर पार्ट्स) मिलने का रास्ता भी साफ हो सकता है। विदेश मंत्रालय में सचिव अरुण कुमार चटर्जी ने बताया कि ओमान इन कलपुर्जों के ट्रांसफर के लिए तैयार है। मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा कि भारत और ओमान के बीच पुराने, खास और मजबूत रिश्ते हैं। चटर्जी ने बताया कि दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर भी भारत सरकार आशान्वित है। इस समझौते से जुड़े कई दस्तावेजों पर दोनों पक्षों की मंजूरी का इंतजार है और टीमें इस पर लगातार काम कर रही है। इसके अलावा पीएम मोदी ओमान में वहां के बिजनेस लीडर्स को भी संबोधित करेंगे। पीएम मोदी अपनी यात्रा के आखिरी चरण में 17–18 दिसंबर को ओमान पहुंचेंगे।

क्या होगा आधिकारिक कार्यक्रम

दौरे का पहला चरण जॉर्डन में होगा, जहां वह 15–16 दिसंबर तक आधिकारिक कार्यक्रमों में शामिल रहेंगे। यह यात्रा जॉर्डन के किंग अब्दुल्ला द्वितीय के न्योते पर हो रही है। यात्रा के पहले दिन पीएम मोदी और किंग अब्दुल्ला द्विपक्षीय बातचीत करेंगे। 16 दिसंबर को पीएम वहां के बिजनेस लीडर्स से भी मुलाकात करेंगे। यात्रा के दूसरे चरण में पीएम मोदी 16–17 दिसंबर को इथियोपिया में रहेंगे। यहां वह प्रधानमंत्री अबी अहमद अली से मुलाकात करेंगे और भारत इथियोपिया रिश्तों के सभी पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

दक्षिण अफ्रीका में चार मंजिला मंदिर गिरने से दो लोगों की मौत, अवैध तरीके से हो रहा था निर्माण

दक्षिण अफ्रीका में डरबन के उत्तर में स्थित भारतीय कस्बे रेडक्लिफ में शुक्रवार दोपहर चार मंजिला मंदिर के ढह जाने से जुड़ी घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई। मलबे में दबे लोगों की तलाश कर रहे बचावकर्मियों ने कठिन परिस्थितियों के कारण शुक्रवार आधी रात के करीब बचाव अभियान रोक दिया। बचाव अभियान शनिवार को पुनरू आरंभ किया जाएगा। इमारत पर कंक्रीट डालते समय पूरा ढांचा ढह गया जिससे एक मजदूर की मौत हो गई और कई अन्य लोग उसके नीचे दब गए। मलबे में

फंसे श्रमिकों और मंदिर के अधिकारियों की सटीक संख्या अभी ज्ञात नहीं है। इसी बीच, पहाड़ी पर स्थित इस मंदिर के परिसर में अपने परिवार के साथ पहुंचे 54 वर्षीय एक श्रद्धालु की इस घटना की खबर सुनने के बाद मौत हो गई। उसकी पहचान अब तक सार्वजनिक नहीं की गई है लेकिन उसका इलाज करने वाले एक चिकित्सा कर्मी ने बताया कि उसे दिल का दौरा पड़ा था। ईथेक्विनी (पूर्व में डरबन) की नगरपालिका ने कहा कि प्रारंभिक रिपोर्ट से पुष्टि हुई है कि मंदिर के निर्माण के लिए कोई भवन योजना स्वीकृत नहीं की गई है यानी यह निर्माण कार्य अवैध था। अहोबिलम मंदिर के नाम से जाना जाने वाला यह मंदिर एक गुफा की तरह बनाया गया है जिसमें वहां मौजूद पत्थरों के अलावा भारत से लाए पत्थरों का उपयोग किया जा रहा था। मंदिर का निर्माण करा रहे परिवार ने बताया कि निर्माण कार्य लगभग दो साल पहले शुरू हुआ था और इसमें भगवान नरसिंहदेव की दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति स्थापित किए जाने का कार्यक्रम था।

थाई और कंबोडियाई नेताओं ने संघर्षविराम नवीनीकृत करने पर सहमति जताई : डोनाल्ड ट्रंप

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को घोषणा की कि थाईलैंड और कंबोडिया के नेताओं ने कई दिन से जारी घातक झड़पों के बाद संघर्षविराम को नवीनीकृत करने पर सहमति व्यक्त की है। यह समझौता उस संघर्षविराम को बचाने के लिए किया गया है, जिसे अमेरिकी प्रशासन ने इसी साल की शुरुआत में कराने में मदद की थी। ट्रंप ने थाई प्रधानमंत्री अनुतिन चर्नविरकुल और कंबोडियाई प्रधानमंत्री हुन मानेट के साथ बातचीत के बाद सोशल मीडिया पर यह घोषणा की। ट्रंप ने अपने 'ट्रुथ सोशल' हैंडल पर पोस्ट में कहा, ''दोनों नेता आज शाम से हर तरह की गोलीबारी रोकने और मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम की सहायता से मेरे साथ हुए मूल शांति समझौते को बहाल करने पर सहमत हो गए हैं।'' मूल संघर्षविराम जुलाई में मलेशिया की मध्यस्थता और ट्रंप के दबाव के बाद हुआ था, जिन्होंने व्यापारिक विशेषाधिकार रोकने की धमकी दी थी। हालांकि, पहले हुए समझौते के बावजूद दोनों देशों के बीच सीमा पार छोटी–मोटी हिंसा और तीव्र विरोधी प्रचार जारी था।

डोनाल्ड ट्रम्प के व्हाइट हाउस बॉलरूम प्रोजेक्ट पर छाया कानूनी संकट, अमेरिका में NGO ने दर्ज कराया मुकदमा

अमेरिकी कांग्रेस द्वारा ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण का दायित्व सौंपे गए एक गैर–लाभकारी संगठन ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नए बॉलरूम के निर्माण को रोकने के लिए व्हाइट हाउस पर मुकदमा दायर किया है। नेशनल ट्रस्ट फॉर हिस्टोरिक प्रिजर्वेशन ने शुक्रवार को यह मुकदमा दायर करते हुए तर्क दिया कि व्हाइट हाउस ने अक्टूबर में ऐतिहासिक ईस्ट विंग को ध्वस्त करने से पहले आवश्यक समीक्षा नहीं करवाई थी। मुकदमे में कहा गया है कि किसी भी राष्ट्रपति को बिना किसी समीक्षा के व्हाइट हाउस के किसी भी हिस्से को ध्वस्त करने की कानूनी अनुमति नहीं है। चाहे वो राष्ट्रपति ट्रम्प हो या फिर राष्ट्रपति जो बाइडेन हो। एक बयान के अनुसार, संगठन वाशिंगटन डीसी स्थित एक संघीय अदालत से व्हाइट हाउस द्वारा कानूनी रूप से अनिवार्य समीक्षा प्रक्रियाओं का पालन करने तक निर्माण कार्य रोकने का अनुरोध कर रहा है। 1949 में कांग्रेस द्वारा स्थापित एक गैर–लाभकारी संगठन, नेशनल ट्रस्ट फॉर हिस्टोरिक प्रिजर्वेशन की अध्यक्ष कैरोल क्विलन ने कहा व्हाइट हाउस निस्संदेह हमारे देश की सबसे प्रभावशाली इमारत है और हमारे शक्तिशाली अमेरिकी आदर्शों का विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रतीक है। इस मुकदमे में कई उल्लंघनों का आरोप लगाया गया है, जिनमें प्रशासन द्वारा राष्ट्रीय राजधानी योजना आयोग को निर्माण योजना प्रस्तुत करने में विफलता, पर्यावरण मूल्यांकन का अभाव और संघीय पार्क के भीतर निर्माण के लिए कांग्रेस की मंजूरी प्राप्त करने में विफलता शामिल है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332

आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466

Email : shaharsamta@gmail.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।